अल-क़ाएम अल मुन्तज़र

(अ.त.फ़.श.)

ख़ुसूसी शुमारा

मोहर्रमुल हराम सन १४४५ हि.

MRP Rs. 15/-

हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लमः

जान लो! अल्लाह इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम पर रोने वालों पर दुरूद-ओ-सलाम भेजता है रहमत-ओ-शफ़क़त के साथ।

(बेहारुल अनवार, जि.४४, स.३०४)

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम व सल्लल्लाहो अ़लैका या वलीयल अ़स्र (अ़ज.) अदरिकना

तर्ज़े ह़यात

तख़्लीक़े बशर यअ़्नी ह़ज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम से लेकर ख़ातेमुल मुरसलीन ह़ज़रत मोह़म्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम तक तमाम अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम का एक जैसा तर्ज़े ह़यात रहा है। नेज़ामे एलाही के अह़काम के तह़्त बशर को ज़िन्दगी बसर करने के लिए हादियाने बरह़क़ को ज़मीन पर उतारा गया। येह तर्ज़े ह़यात हमेशा से नेकी, ख़ैर, हमदर्दी, मोह़ब्बत, मसावात, आ़दिलाना ज़िन्दगी बसर करना, ज़ुल्म से दामनकश रहना, मज़लूमों की मदद करना, ए़बादते ख़ुदावन्दी में अपने वक़्त को सर्फ़ करना, रिज़्क़े ह़लाल कमाना और इसी तरह़ की तमाम नेकियों की तरफ़ दअ़्वत देता रहा।

इसीलिए ख़ुदावन्द आ़लम ने मक़सदे ह़याते इन्सानी की ख़ातिर जो तर्ज़े ह़यात क़ुरआन की आयतों में बयान फ़रमाया है, वही तर्ज़, तौरेत, ज़ुबूर और इन्जील में भी बयान किया है और वोह तर्ज़ येह है :

"नहीं पैदा किया मैंने जिन्नात और इन्सान को मगर कि वोह सिर्फ़ मेरी ए़बादत करें।"

(सूरह ज़ारियात, आयत ५६)

एक बेहतरीन मुआ़शरे की बुनियाद डालने के लिए अम्बिया-ओ-मुरसलीन अ़लैहिमुस्सलाम को भेजा, लेकिन तकवीने आ़लम से लेकर जैसे जैसे ज़माना गुज़रता चला गया वैसे वैसे तागूती असरात के तमाम अ़नासिर जाग उठे और वोह इन नेकियों के मद्दे मुक़ाबिल में आकर खड़े हो गए। इसके सामने इन का मतलए़ निगाह रसूल के बताए हुए अह़काम पर चलने की मुख़ालेफ़त नस्बुल ऐ़न रहा।

इस्तेह़साल, जंग, ख़ूँरेज़ी, क़त्ल-ओ-ग़ारतगरी, यतीमों के मुँह से लुक़्मे का छीन लेना, रौंदना, ह़ुकूमत साज़ी के लिए झूठ बोलना, झूठ के साथ साथ नए नए तब्लीग़ाती इल्म का एख़्तेराअ़् करना,जैसे इल्मे नफ़्सीयात और झूठ को उनकी रगों में ख़ून बनाकर के डाल देना मसलन इब्ने माजा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम के जनाज़े के मुतअ़ल्लिक़ लिखते हैं कि आप के जनाज़े पर सब आए। फ़ुलाँ आए, फ़ुँला आए, फ़ुँला आए, अ़ली अ़लैहिस्सलाम भी आए, और कहा या रसूलुल्लाह मैं आपकी रेह़लत पर इतना रोता कि आप को अपने आँसुओं से नहला देता, लेकिन मैं क्या करूँ आपने

फ़ेहरिस्त

तर्ज़े ह़यात १

अ़ज़ादारी, सीरते सह़ाबा है ६

इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम का करम अपने ज़ाएरीन पर ११

क़तरए नजात १६

ह़ज़रत आयतुल्लाह अल-उ़ज़्मा आक़ाए सैयद अ़ली हुसैनी सीस्तानी दाम ज़िल्लहुल आ़ली का पैग़ामे अरबईन २१

मनअ् किया है, रोना गुनाह है इसलिए मैं नहीं रो सकता। येह जुम्ले एक वकील, साहेबे क़लम और बहुत बड़ा लिखने वाला, इब्ने माज़ा लिखता है अपनी किताब में, क्या येह सच है? और अगर येह सच नहीं है तो येह झूठ इतने रोशन दिमाग़ इन्सान जो साहेबे क़लम है उसने येह रवायत किस जज़्बे के तहत लिखी है। आया येह पहले से इल्मे नफ़्सीयात के तौर पर माल-ओ-दौलत या मुआशेरा या वोह लोग जो अली अलैहिस्सलाम के ख़िलाफ़ थे उनकी तरफ़ से एक साज़िश है जो अली अलैहिस्सलाम को पसे पर्दा डालना चाहता है, उसकी हेमायत में लिखा।

यही नहीं सीरते मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम में एक रवायत आई रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम ने अपनी छोटी बेटी को बुलाया और कहा अल्लाह तआला ने तुम को बहुत बड़ी नेअ्मत दी है और वोह तस्बीहे फ़ातेमा है। येह लफ़्ज़ "छोटी बेटी" एक खुल्लम खुल्ला, साफ़ साफ़ झूठ है जबकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम की एक ही बेटी थी। लेकिन दौलत से आले रसूल सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम को पसे पर्दा रख दिया या तह्तुश्शोआअ् में डाल दिया और उनकी अज़मत को कम करने के लिए येह तसव्वुर पेश किया कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम की चार या तीन बेटियाँ थीं, दो बेटियाँ उस्मान के साथ ब्याही थीं इसलिए उनका लक़ब "ज़ुलनूरैन" रखा गया। (मगर इसको क्या किया जाए कि किसी एक को भी हज़रत ज़हरा सलामुल्लाह अलैहा जैसा दर्जा नसीब नहीं हुआ।)

येह बात अक्सरीयत के ख़ून में किस तरीक़े से दाख़िल हुई और रगों में दौड़ती हुई दिमाग़ में बस गई?

तमाम कुतुबे सीरते नबवी में लिखा है कि जब रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम की रेहलत हो गई तो उमर बरहना तलवार लेकर मदीने की गलियों में घूमने लगे और कहा कि कोई येह न कहना कि रसूले ख़ुदा का इन्तेक़ाल हो गया। अब इस वाक़ेआ को जो एक मुकम्मल झूठ है एक ऐसा झूठ है जो रोज़े रोशन की तरह से सामने आया है। अब इसी के बारे में हम ने एक आलिम से पूछा तो वोह कहते हैं कि मोहम्मद मुस्तफ़ा अगर रसूल न होते तो उमर रसूल बन जाते। इस तक़ाबुल को देखने के बअ्द ज़रा इस जुम्ले पर ग़ौर करिये कि उमर बरह्ना तलवार लिए इस बात की तब्लीग़ कर रहे हैं कि झूठ बोलो और इस पर तौजीह करते हैं कि उमर एक बहुत जलाली आदमी थे। समझ में नहीं आता कि अक़्ल-ओ-दानिश से इस्लाम को अगर कोई दूसरा मज़हब इस वाक़ेआ के तवाज़ुन पर देखे तो जंगे ओहद में अगर वोह रसूले ख़ुदा हो जाते तो इस्लाम जंगे ओहद ही में दफ़्न हो गया होता।

अम्बिया अलैहिमुस्सलाम के सामने आज़माइश के लिए ख़न्नास के मुलाज़ेमीन जो जिन-ओ-इन्स हैं, कसरत के साथ सामने खड़े हो गए। हत्ता कि हज़रत मरियम सलामुल्लाह अलैहा के सामने पूरा मुआशेरा खड़ा हो गया कि बताओ येह बच्चा किसका है। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने बीबी मरियम की पाक दामनी की ऐसी गवाही दी जो मुसल्लम हो गई और येह एक हक़ीक़त है कि ख़ुदा जो चाहता है करता है।

झूठों का मुआशेरा आकर के नबूवत और एलाही अहकाम के मुक़ाबिल पूरा ज़ोर लगाकर के उसे ख़त्म करने की कोशिश करता है। येह ज़माने का दस्तूर चला आ रहा था यहाँ तक कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम ने येह इर्शाद फ़रमाया कि "जितनी मुसीबतें सारे अम्बिया और मुरसलीन ने उठाई हैं उससे ज़्यादा मुबीबत मैंने अकेले उठाई।" इसकी वजह येह थी कि जितने मुकज़्ज़बीन, मुफ़सेदीन, मुनाफ़ेक़ीन, ज़ालेमीन, काफ़ेरीन थे येह सब के लिए तह ब तह आयतें आती रहीं और येह तमाम बड़े वसीअ् पैमाने पर रेसालत मआब सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम के ज़माने में आश्कार हो गए।

आइये हम इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की शहादत से पहले करबला तक हमारे क़ारेईन के ज़ेह्न को मब्ज़ूल कराने के लिए एक हल्का सा तज्ज़िया रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम की हयाते तय्येबा का सामने रखें और तर्ज़े हयाते इन्सानी का एक छोटा सा इज्माली बयान या छोटी सी तौजीह करें कि हमारे समझ में आ जाए कि करबला कितना अज़ीम सानेहा था और कितना बलन्द था और अल्लाह ने इसकी फ़ज़ीलतों के बदले में क्या क्या दिया है।

मक्के वाले इस क़द्र जाहिल थे कि वोह ख़जूर का बुत बनाते थे और जब भूख लगती थी तो खा लेते थे यअ्नी अपने ख़ुदा को भी खा लेते थे। बुत परस्ती अपने उरूज पर थी। इस माहौल में जब कोई ताजिर आता था वोह ऊटों को लेकर ग़ाएब हो जाते थे या उसका माल लूट लेते थे। रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम ने एक एदारा क़ाएम किया कि जिस में येह तमाम चीज़ें मन्सूख़ कर दी गईं और उस शख़्स को सज़ा दी जाएगी जो किसी ताजिर या बाहर से आने वाले का माल और उसके शुतर को छीन ले। एक तरह से पहले बयालीस साल तक लोग रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम को अमानत दे जाते थे इसलिए कि अमानत में ज़र्रा बराबर भी ख़यानत नहीं होती थी। उनको जब वापस करते थे तो उसी हालत में करते थे इसलिए रसूल का नाम "मोहम्मदे अमीन" पड़ गया।

इस तरह से एक नबूवत के तर्ज़े हयात जो अहकाम और दस्तूरे एलाहिया से लेकर आए थे उसके लिए मक्का के जाहिल क़ुरैश के मुआशरे के मिज़ाज को धीरे धीरे पहले हमवार किया। पहले ज़ेह्न को हमवार किया ताकि वोह नेकी समझ सकें, ख़ैर को ख़ैर समझ सकें, ज़ुल्म को ज़ुल्म समझ सकें, इस्तेहसाल को इस्तेहसाल समझ सकें।

हुकूमत इन्सान को ज़िन्दगी का तर्ज़े हयात नहीं है इसलिए कि येह तर्ज़े हयात फ़ानी है। क़ुरआन में जगह जगह अर्ज़े ख़ाकी पर बसने वाले मख़्लूक़ इन्सान को फ़ज़ीलतें बख़्शी हैं। इन फ़ज़ीलतों का मह्वर येह है कि वोह आज़्माइश से गुज़रेगा और मौत के बअ्द जब अपनी आर्ज़ी ज़िन्दगी गुज़ार करके अपनी दाएमी ज़िन्दगी की तरफ़ आएगा तो उसको एक ऐसी जन्नत मिलेगी जिसमें उसके लिए जगह जगह नहरें रवाँ होंगी जिसकी तौज़ीह सूरह रहमान कर रहा है। क़ुरआन में ख़ुदावन्द आलम ने जगह जगह दोज़ख़ का ज़िक्र करते हुए फ़रमाया है कि हर एक को पलटना है।

जब इस तरीक़े से मिज़ाज को हमवार कर लिया तो आप सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम ने बेअ्सत का एअ्लान किया। बेअ्सत के एअ्लान से पहले आप ने दुआ माँगी "सुलतानन नसीरा" (मुझ को एक हमदर्द दे दे)। आप सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम के वसी हज़रत अली अलैहिस्सलाम उस वक़्त नौ साल के थे। एक शख़्स भी उठकर नहीं खड़ा हुआ कि मैं आपकी मदद करूँगा जबकि उस वक़्त रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम येह कह रहे थे कि आज के दिन जो मेरी मदद करेगा वही मेरा ख़लीफ़ा होगा, मेरा वसी होगा।

क़ुरआन की एक आयत के आईने में इस लफ़्ज़ को आप देख लीजिए "मा मोहम्मदुन इल्ला रसूल" (मोहम्मद नहीं हैं कुछ भी मगर रसूल हैं)। सोता है तो रसूल है, जागता है तो रसूल है, लोगों से बात करता है तो रसूल है, अहकाम देता है तो रसूल है, ज़िन्दगी के तर्ज़े हयात को बताता है तो रसूल है, अगर इस लफ़्ज़ के आईने में देखा जाए तो हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम का येह जुम्ला यक़ीनन मिनजानिबिल्लाह है।

वक़्त गुज़र गया और मक्का की ज़मीन ज़ुल्म से भर गई कि आप को हिजरत करनी पड़ी, मदीने में जब इस तर्ज़े हयात का उरूज हुआ, रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व

आलेही व सल्लम के ज़माने में तो वोह सात साल तक कम से कम उन तमाम क़लम कारों से दूर था कि जो इस बात की सई कर रहे थे कि रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम को किसी तरीक़े से ख़त्म कर दिया जाए और उनकी रेसालत का एख़्तेताम हो जाए। लेकिन सात साल के बअ्द जब मक्का फ़त्ह हो गया तो अब वोह लोग मदीने से मक्का की तरफ़ जाते थे और एख़्तेलाफ़ पैदा करते थे, एक तूफ़ान पैदा करते थे, वोह नजरान के ईसाई और यहूदी थे। उन लोगों की जो बग़ावतें और जंग की साज़िशें होती थीं, उसको तो रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम ने वहीं से बन्द करवा दिया कि जो जा के अबू सुफ़ियान के घर में पनाह लेगा वोह महफ़ूज़ है। इस तरह वोह जंग जो जंगे बद्र, ओह्द और ख़न्दक़ के ज़माने में वाक़ेअ् हुई थी, उसके दरवाज़े तो बन्द हो गए लेकिन जो वहाँ से आने लगे तो अब एक सवाल पैदा होता है "क्या मिज़ाज बदल गया था?"

येह आले रसूल की दुश्मनी क्यों, येह पुरानी दुश्मनी चली आ रही थी। आख़िरकार येह हुआ कि क़लमकारों ने उन लोगों को पकड़ा जो ज़बान के बड़े तेज थे जैसे अबू हुरैरा और ख़ुद बुख़ारी कहता है मेरे ज़ेह्न में दो लाख हदीसें हैं, जिसमें सिर्फ़ इतनी हदीसें हमें सहीह मअ्लूम पड़ीं यअ्नी अहदीस के ढ़ेर लगा दी। और जिस तरह रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम ने कहा था कि हमारे ऊपर जितने मसाएब पड़े हैं वोह तमाम अम्बिया और मुरसलीन से ज़्यादा हैं। वक़्त ख़ुद बोलने लगा कि रफ़्ता रफ़्ता मुनाफ़ेक़ीन की बारीक तरीन साज़िशें इतना ज़ोर पकड़ने लगीं कि वोह वाक़ेआत जो इस्लाम की बुनियाद को मज़बूत कर रहे थे और आले रसूल के तर्ज़े हयात को सामने ला रहे थे, उनको पीछे ढकेलने की कोशिश की गई।

हम ने बहुत सी किताबें पढ़ी लेकिन जिस तरीक़े से मुबाहेला का ज़िक्र होता है उसका तज़्ज़ियाती सुलूक क़लम कारों के हाथों से क्यों छूट गया? क्या एहसास ख़त्म हो गया था? ऐसा नहीं है। अब्बासी हुकूमत के ज़माने में अब्बासी हुकूमत ने एक मर्तबा वहाँ के तमाम क़लमकारों को, तमाम बड़े बड़े लिखने वालों को और तमाम बड़े बड़े इन्सानों को, जागीरदारों को बुलाया और उनको इन्आम-ओ-इकराम दिया और इमाम जअ्फ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम को बुलाया और उनको बिठाया। उनके एक बाज़ू में मामून और एक बाज़ू में अमीन बैठा हुआ था, सबको बड़ी बड़ी रक़म दिया लेकिन इमाम जअ्फ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम को बहुत कम दिया। जब मामून ने पूछा ऐ पिदरे बुज़ुर्गवार येह इन्आम देकर आप ने जअ्फ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम को ज़लील किया है, सबको बड़ी बड़ी रक़म दी और इमाम जअ्फ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम को बहुत कम दी। उसने कहा बेटा तुम सियासत को समझो, अस्ल में जिस हुकूमत पर तुम बैठे हुए हो येह हुकूमत उन्हीं की है अगर हम उन्हें ज़्यादा देंगे तो येह ताक़तवर हो जाएँगे।

इस वाक़ेआ को पढ़ने के बअ्द येह अन्दाज़ा होता है कि किस तरीक़े का मुआशेरे का चलन था जहाँ झूठ पूरी ताक़त के साथ ज़ोर पकड़ रहा था और इन्सान के ऐसे ऐसे किरदार आ रहे थे कि जो आले रसूल अलैहिमुस्सलाम की मुख़ालेफ़त के ऊपर आमादा थे। इसी तर्ज़े हयात को बचाने के लिए रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम ने हज़रत अली अलैहिस्सलाम से वसीयत की कि "अली जब सारी दुनिया, सारे लोग दुनिया की तरफ़ चले जाएँ तो तुम दीन की हेफ़ाज़त करना।" अली अलैहिस्सलाम ने इसका हक़ अदा किया और इस तरह से अदा किया कि जब अली अलैहिस्सलाम का घर जलाया गया, जब अली अलैहिस्सलाम के गले में रस्सी डालकर खींचा गया तो जनाबे फ़ातेमा ज़हरा सलामुल्लाह अलैहा ने कहा कि "ऐ अबुल

हसन! आप इस तरह से क्यों ख़ामोश हैं जिस तरह से आप के ऊपर येह मज़ालिम हो रहे हैं और आप आवाज़ नहीं उठाते हैं", तो आप ने एक ही जवाब दिया था "ऐ बीबी! मेरा वज़ीफ़ा और मेरा तरीक़ा, मेरा तर्ज़े हयात वही है जो रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम ने हम पर अ़एद किया है, वारिद किया है, और कहा कि ऐ अ़ली, हमारे दीन की हेफ़ाज़त करना।" अगर मैं इस वक़्त तलवार उठा लूँ तो लोग यही कहेंगे कि अ़ली ने हुकूमत के लिए, ख़ेलाफ़त के लिए तलवार उठा ली।

येह सिलसिला बाग़े फ़िदक के ग़स्ब के बअ़्द हुकूमत साज़ी की तस्वीर बन गया। बड़े बड़े लश्करों की तश्कील हुई और जंगें शुरूअ़् हो गईं। घर जलाया गया, हज़रत मोहसिन अलैहिस्सलाम और हज़रत फ़ातेमा ज़हरा सलामुल्लाह अलैहा की शहादत वाक़ेअ़् हुई लेकिन अ़ली अलैहिस्सलाम ने सब्र किया, ख़ामोश रहे। तमाम मुसीबतों को अपने दोश पर ले लिया लेकिन अ़ली अलैहिस्सलाम ने जब तक कि उन पर हमला नहीं हुआ, जंग की सूरत में किसी लश्कर को तश्कील नहीं दिया।

आग सुलगती रही, अबू सुफ़ियान, मुहद्देसीन और ख़रीदे हुए रावियों के साथ अपना काम करता रहा यहाँ तक कि मुआ़विया अमीरुल मोअ़्मेनीन बन गया। जंगे सिफ़्फ़ीन अ़ली अलैहिस्सलाम पर वारिद की गई थी। इस जंग में जनाबे अ़म्मार की शहादत हो गई जिनके बारे में रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम ने कहा था एक बाग़ी गिरोह अ़म्मार को क़त्ल करेगा उस वक़्त उनके सामने दूध का प्याला रखा जाएगा। येह बात जब मुआ़विया को बताई गई तो उसने कहा कि येह ज़िम्मेदारी अ़ली की थी कि वोह उन्हें क्यों लेकर आए थे।

क़ारेईन केराम! ग़ौर फ़रमाया आपने कि किस तरह से ज़ेह्नों को पलटाया जा रहा था। वोह मिज़ाज जिसको रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम ने मक्का में हमवार किया था उसी मक्का में ऐसी साज़िशों के रेशे धीरे धीरे उभर कर के पूरी ताक़त के साथ आ गए थे और मुआ़विया की साज़िशों का पूरा पूरा लावा बन गया। जब मुआ़विया वासिले जहन्नम हुआ तो येह लावा जो दबी हुई मुनाफ़ेक़त के साथ जल रहा था वोह ज़ाहिर होकर फट गया। आतिश फ़ेशाँ बन गया।

यज़ीद ने अपनी पूरी ताक़त के साथ इस बात का एअ़्लान कर दिया कि न कोई वही आई थी न कोई रसूल आया था। यअ़्नी ज़ेह्नों पर मुहर लगा दी। येह तो इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम का जिगर था कि जिसने अ़रब के ज़ालिमों, हुकूमत के चाहने वालों और मज़लूमों का ख़ून पीने वालों के आतिश फ़ेशाँ को ठंडा करने के लिए अपने छह महीने के बच्चे का तबस्सुम दे दिया।

अलक़िस्सा मुख़्तसर तमाम बदलते हुए हालात-ओ-हादेसात के तह्त जो तर्ज़े हयात में एक बड़ा तग़य्युर आ रहा था वोह दौरे यज़ीद में अपने उरूज पर था। और कर्बला का वोह अ़ज़ीम सानेहा वुक़ूअ़् पज़ीर हुआ जिसने तर्ज़े हयात जिसकी तशरीह और तौजीह मुरसले अअ़्ज़म सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम की हयाते तैयबा और आले रसूल अलैहिमुस्सलाम की ज़िन्दगी का अगर मुतालेआ किया जाए तो सिमट कर ज़ेह्न में क़ल्ब में एक नूर सा पैदा होता है जो हमारी अ़क़ीदत की आख़ेरत का पूरा मन्ज़र सामने ले आता है।

बाराने ज़ुल्म-ओ-जौर का दौर, दौरे हाज़िर है। क़ाएमे आले मोहम्मद अलैहिस्सलाम का क़याम बहुत नज़्दीक है। सोगवाराने ज़माने के मातम की आवाज़ हमारे आक़ा वलीये अ़स्र अलैहिस्सलाम, मुन्तक़िमे ख़ूने हुसैन अलैहिस्सलाम के गोश गुज़ार हो रही हैं। हमारे आक़ा अपने ज़हूर में तअ़्जील फ़रमाएँ। हर एक मातमदार, अश्कबार है और हर नमाज़ में आप के तअ़्जील के लिए दस्ते ब दुआ है। अलअ़जल अलअ़जल या मौलाया या साहेबज़्ज़मान।

अ़ज़ादारी, सीरते सहाबा है

क़ारेईन मोहतरम! अल मुन्तज़र के मोहर्रम के ख़ुसूसी शुमारों में अ़ज़ादारी, रोना, रुलाना, और अ़ज़ादारी के मुख़्तलिफ़ मरासिम पर सेर हासिल बह्सें होती रही हैं और इन्शाअल्लाह आइन्दा भी येह सिलसिला जारी रहेगा। इस मज़्मून में हम तारीख़ और अहदीस की किताबों से मज़्कूरा उन्वान पर मुख़्तसरन रोशनी डालना चाहते हैं। उन्वान ख़ुद वज़ाहत कर रहा है कि पैग़म्बरे अकरम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम के अस्हाब भी अ़ज़ादारी, रोना, रुलाना और अमवात पर रंज-ओ-ग़म का मुज़ाहेरा करने में आगे आगे रहे हैं।

गुज़श्ता शुमारों में पैग़म्बरे अकरम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम के बारे में गिरिया-ओ-अश्क के बारे में जो कुछ गुज़रा, उसके अ़लावा मुर्दगान-ओ-गुज़श्तगान पर रोना, रुलाना, और सोगवारी-ओ-अ़ज़ादारी आँहज़रत सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम के अस्हाब में भी राएज रही है। तारीख़ ने सहाबा की अ़ज़ादारी-ओ-सोगवारी के बहुत से नमूनों को महफ़ूज़ कर लिया है। नमूने के तौर पर चन्द मवारिद की तरफ़ इशारा करते हैं :

पैग़म्बर सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम की शहादत पर अह्ले मक्का की अ़ज़ादारी

सईद बिन मुसय्यब नक़्ल करते हैं :

"जब पैग़म्बर सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने इर्तेहाल फ़रमाया, शहरे मक्का गिरिया की बलन्द आवाज़ों से लरज़ उठा।"

(अख़बारो मक्कता फ़ी क़दीमिद्दह्र-ओ-हदीसा, जि.३, स.८०, ह.१८३२, मोहम्मद बिन इस्हाक़ बिन अल अ़ब्बास अल फ़ाखी मुतवफ़्फ़ा सन २७५ हि., मत्बूआ : दारे ख़िज़्र, बेरूत सन १४१४ हि. त:३, तहक़ीक़ : अ़ब्दुल्लाह दहीश, इसी तरह एअ़्तेक़ादे अह्ले सुन्नत जि.७, स.१२९२, ह.२४५१ तालीफ़ हेबतुल्लाह बिन अल हसन बिन मन्सूर अबुल क़ासिम मुतवफ़्फ़ा सन ४१८ हि., दारे तय्यब अर्रेयाज़)

इस तारीख़ी शाहिद के लिए मज़कूरा बाला हवालों को देखा जा सकता है।

अलबत्ता हम ने इस मज़्मून की तहरीर के लिए "शुब्हाते अ़ज़ादारी" तालीफ़ सैयद मुज्तबा अ़सीरी की फ़ारसी किताब की जि.१, स.३०९ और उसके आगे से इस्तेफ़ादा किया है।

पैग़म्बर सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम के सोग में आ़एशा और मदीने की औ़रतों की अ़ज़ादारी

अह्ले सुन्नत की किताबों में आ़एशा के बारे में पैग़म्बरे अकरम सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम से बहुत सी हदीसें नक़्ल हुई हैं मसलन तारीख़े मदीनए दमिश्क में इब्ने अ़साकिर ने नक़्ल किया है :

"अपने दीन के कुछ हिस्सों को आ़एशा से लो।"

(तारीख़े मदीनए दमिश्क़, जि.३०/४५९ इब्ने अ़साकिर मुतवफ़्फ़ा, सन ५७१ हि., दारुल फ़िक्र, बेरूत सन १९९५ ई.)

इसी तरह दीग़र मुवर्रेख़ीन ने लिखा :

"अपने आधे दीन को हुमैरा से अख़ज़ करो।"

(अस सीरातुल नबवीया लाबिन कसीर, जि.२ स.१३७ मुतवफ़्फ़ा सन ७७४ हि. दारुन्नश्र; अल बेदाया वन्नेहाया, जि.३, स.१२९ अबुल फ़ेदा इस्माईल बिन उ़मर, मुतवफ़्फ़ा ७७४ हि., मकतुबल मआ़रिफ़, बेरूत)

इसी तरह लिखा कि :

"अपने दो तिहाई दीन को आएशा से हासिल करो।"

(शज़रातुज़्ज़हब फ़ी अख़बारे मन ज़हब जि.१, स.६२, अब्दुल हय बिन अहमद अल हंबली मुतवफ़्फ़ा सन १०८९ हि. ; रूहुल मआनी फ़ी तफ़सीरिल क़ुरआन अल अज़ीमुल सबअ् अल मसानी, जि.३, स.१५५, अज़ शहाबुद्दीन सैयद महमूद अल आलूसी अल बग़दादी, मुतवफ़्फ़ा, सन १२७० हि.)

तज़क्कुर : येह रवायतें उन लोगों के लिए नक़्ल की गई हैं जो उनके क़ौल को मोअ्तबर जानते हैं वरना हदीस के मेअ्यार पर येह हदीसें खरी नहीं उतरती हैं। अह्ले सुन्नत के लिए अहादीसे आएशा हुज्जत है। अब ज़रा मुलाहेज़ा फ़रमाएँ कि गिरिया के बारे में आएशा क्या फ़रमाती हैं? कहती हैं :

"पैग़म्बर की रेहलत के बअ्द उनके सोग में, मैं दूसरी औरतों के हमराह (पैग़म्बर की दूसरी बीवियों और मदीना की औरतों के अलावा) खड़ी हुई और अपनी सूरत और सीना को पीट रही थी।"

(अल सीरतुन्नबवीया, जि.२, स.७३, अबू मोहम्मद अब्दुल मलिक बिन हिशाम बिन अय्यूब अल हुमैरी अल मआफ़री मुतवफ़्फ़ा सन २१३ हि. ; मुस्नद अहमद बिन हंबल, जि.२, स.२७४, ह.२६३९१ ; अल कामिल फ़िल तारीख़, जि.२, स.१८६)

इस हदीस के ज़ैल में सालेही शामी लिखते हैं : ''इस हदीस को सिर्फ़ इब्ने इस्हाक़ ने नक़्ल किया है और चूँकि इब्ने इस्हाक़ हदीस के सुनने की तसरीह कर रहे हैं, उनकी हदीस हसन और क़ाबिले एअ्तेमाद है।''

यहया बिन उब्बाद का बयान है अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर से मैंने सुना कि उन्होंने अपने वालिद से नक़्ल किया है कि उन्होंने आएशा से सुना कि वोह कह रही थीं कि जब रसूलुल्लाह की रूह कब्ज़ हुई तो वोह मेरे हुजरे में थे, मैंने उनके सर को एक तकिया पर रखा और मैं दूसरी औरतों के हमराह खड़ी हुई और अपनी सूरत और सीना को पीट रही थी।

तवज्जोह : सहीह मअ्नों में वहाबी नज़रियात के बानी इब्ने तैमिया हर्रानी ने भी इब्ने इस्हाक की हदीस पर एअ्तेबार किया है और लिखा है :

"जब इब्ने इस्हाक़ कहें कि मुझसे हदीस कही गई है तो उलमाए हदीस के नज़्दीक उनकी हदीस सहीह और मूरिदे एअ्तेमाद है।"

(मज्मूआ अल फ़तावी, जि.३३, स.८६)

एक एअ्तेराज़

कहते हैं कि जब शीआ आएशा के अमल और आज़ादारी और सीना ज़नी-ओ-सूरत पर तमाचा लगाने से अपनी आज़ादारी पर इस्तेदलाल करते हैं तो वहाबी कहते हैं आएशा ने ख़ुद अपने इस अमल को ग़लत क़रार दिया है और एअ्तेराफ़ करते हुई कहती हैं कि मैंने इस काम को "बेवक़ूफ़ी" और "नादानी" और "कमसिनी" की बेना पर अन्जाम दिया है।

हमारा जवाब

१) अगर वहाबियत की इस बात को आएशा के अमल के सिलसिले में क़बूल कर लिया जाए तो इसी एह्तेमाल को उनके तमाम अमल में भी क़बूल करना चाहिए और फिर जहाँ दो तिहाई दीन को आएशा से हासिल करने को कहा है, उसका क्या होगा? या फिर गुज़श्ता सत्रों पर पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम से नक़्ल की हदीस निस्फ़ ईमान या दो तिहाई दीन आएशा से लो, इन सबका क्या होगा?

२) फ़र्ज़ किया जाए कि आएशा ने अपनी आज़ादारी,

सीनाज़नी और सूरत पर तमाँचे लगाना वग़ैरह पर पशेमानी का इज़्हार किया अपनी कमसिनी की वजह से तो सहाबा की औरतें जो सिन में उनसे ज़्यादा थीं और आक़िल तर थीं और उनके हमराह सीनाज़नी कर रही थीं, उन लोगों ने अपने अमल पर कभी इज़्हारे पशेमानी नहीं किया।

३) आएशा का येह दाअ्वा कि पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम की जाँकनी के आलम में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम का सरे मुबारक उनके सीने पर था क़ाबिले क़बूल नहीं है क्योंकि अमीरुल मोअ्मेनीन अलैहिस्सलाम की तस्रीह बिल्कुल इस दअ्वा के ख़िलाफ़ है। अमीरुल मोअ्मेनीन अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया हैं :

"पैग़म्बरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम जब दुनिया से गए तो उनका सरे मुबारक मेरे सीने पर था।"

(नहजुल बलाग़ा, ख़ुत्बा १७२)

तज़क्कुर : बहुत सी हदीसों में हज़रत हमज़ा अलैहिस्सलाम की शहादत का वाक़ेआ नक़्ल किया गया है कि हज़रत पैग़म्बरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम ने ख़ुद गिरिया फ़रमाया, अज़ादारी की, और सहाबा को उन पर गिरिया करने और अज़ादारी का हुक्म दिया। येह ख़ुद एक नमूना है पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम की ज़िन्दगी में कि आप सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम ने गिरिया के लिए मनअ् नहीं किया बल्कि गिरिया का हुक्म दिया। और सहाबा ने और अह्लेबैत अलैहिमुस्सलाम ने भी किसी तरह की रुकावट नहीं की और मनअ् नहीं किया।

इब्ने असीर जज़री सातवीं सदी हिजरी के मशहूर आलिमे अह्ले सुन्नत ने एक दूसरे अह्ले सुन्नत के मशहूर आलिम बल्कि वहाबियों के मक़बूल आलिम "वाक़दी" (मुतवफ़्फ़ा सन २०७ हि.) से नक़्ल किया है कि :

"उस रोज़ (यअ्नी शहादते हज़रत हमज़ा के दिन) से आज तक औरतें पहले हज़रत हमज़ा पर और फिर अपने शहीदों पर रोती हैं।"

(असदुल ग़ाबा फ़ी मअ्रेफ़तिस्सहाबा, जि.२, स.६८ अज़ इब्ने असीर जज़री मुतवफ़्फ़ा सन ६३० हि.)

येह इसलिए है कि जब पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम ने सुना कि मेरे चचा हमज़ा पर रोने वाला कोई नहीं है येह सुनकर अस्हाब ने अपनी औरतों को जनाबे हमज़ा पर रोने को कहा। हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम के गोशे मुबारक तक इन औरतों के गिरिया की आवाज़ पहुँची तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम ने उन औरतों के हक़ में दुआ फ़रमाई।

(अल इस्तीआब जि.१, स.३७४ अज़ यूसुफ़ बिन अब्दुल्लाह बिन मोहम्मद बिन अब्दुल बिर, मुतवफ़्फ़ा सन ४६३ हि.)

तवज्जोह : येह ख़ुद एक फ़ित्री हुक्म है अज़ादारी के लिए।

उ़स्मान की क़मीज़ के लिए एक साल अज़ादारी

अज़ादारी एक फ़ित्री अमल है और हर मज़हब में किसी अज़ीज़ की मौत पर रोना सुन्नत है यअ्नी येह फ़ित्री अमल है जो कि जारी है क़ुरआन-ओ-हदीस-ओ-सुन्नते नबवी भी इसकी शाहिद है और सहाबा भी और दूसरे मुसलमान भी इस पर अमल पैरा रहे हैं।

लेकिन जो बात क़ाबिले तवज्जोह और क़ाबिले ग़ौर-ओ-फ़िक्र है येह कि इब्ने तैमियए हर्रानी और उनके पैरवान जैसे अफ़राद शीओं की अज़ादारी पर नुक़्ता चीनी करते हैं और अज़ादारी को हेमाक़त ख़याल करते हैं,

लेकिन जब अह्ले सुन्नत अपने बुज़ुर्गों और उलमा के लिए अज़ादारी करते हुए दिखते हैं तो अपनी आँखों को बन्द कर लेते हैं और अपने होंठो को सी लेते हैं और फिर उनकी सदाए एअ्तेराज़ सुनाई नहीं देती।

नमूने के लिए उनके तीसरे ख़लीफ़ा के क़त्ल पर उनकी क़मीज़ के लिए एक साल की अज़ादारी को मुलाहेज़ा फ़रमाएँ:

"मुआविया ने उस्मान की क़मीज़ और अँगूठियों को मिम्बर पर लटका दिया और अपने अतराफ़ के लोगों को जमअ् किया और एक साल तक वोह सब रोते और अज़ादारी करते रहे। शाम के एक गिरोह ने क़सम खाई कि बिस्तरे आराम पर न जाएँगे और न सोएँगे और अपनी बीवियों से क़ुरबत नहीं करेंगे यहाँ तक कि उस्मान के क़ातिलों को क़त्ल कर दें या ख़ुद मारे जाएँ। वोह लोग इसी हाल में रहते और हर रोज़ उस्मान की क़मीज़ को मिम्बर पर ले जाते और एक साल तक उस्मान के लिए रोते रहें।"

(तरीख़े तबरी, जि.३, स.७० अज़ अबू जअ्फ़र मोहम्मद बिन जरीर तबरी, मुतवफ़्फ़ा सन ३१० हि. ; अल कामिल फ़ित्तारीख़ जि.३, स.११६१ अज़ शीबाती मुतवफ़्फ़ा सन ६३० हि. ; शुबहाते अज़ादारी जि.१ स.३१५)

क्या जवानाने जन्नत के मसाएब पर गिरिया करना, अज़ादारी करना बेहतरीन अमल नहीं है?

वहाबियों से एक सवाल

वहाबियत, इस तरह के मतालिब जो उनके ख़ुद की तारीख़ी किताबों में कसरत से पाए जाते हैं, क्या जवाब देते हैं? ज़ाहिर है, उनका तअस्सुब और अह्लेबैत अलैहिमुस्सलाम और उनके चाहने वालों से दुश्मनी में और भी एज़ाफ़ा करेगा। ऐसे ही लोग जहन्नम का ईंधन क़रार पाएँगे।

उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ के सोग-ओ-अज़ादारी में आसमान-ओ-ज़मीन का गिरिया

येह भी बड़ी अजीब बात है कि सैयदुश्शोहदा अलैहिमुस्सलाम की अज़ादारी पर सदाए एअ्तेराज़ ख़ूब बलन्द होती है लेकिन अगर उनके मन पसन्द शख़्सीयात की बात आती है तो उन पर रोना और उनके लिए अज़ादारी जाएज़ हो जाती है। कहते हैं कि उमर इब्ने अब्दुल अज़ीज़ जो बनी उमय्या का एक ख़लीफ़ा था उसकी वफ़ात पर ज़मीन-ओ-आसमान रोए। ख़ालिद रबई कहता है:

"तौरात में लिखा है कि उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ की मौत पर ज़मीन-ओ-आसमान ४० शबाना रोज़ रोएँगे।"

(सियरे अअ्लामुन्नबला अज़ मोहम्मद बिन अहमद लज़हबी (७४८ हि.); तारीख़ुल ख़ुलफ़ा, जि.१, स.१२४५ अज़ सियूती (९११ हि.))

तवज्जोह : हम ने तौरात में ऐसी कोई तहरीर को नहीं देखा। काश जिन लोगों ने येह सब लिखा ख़ुद ही हवाले लिखने की ज़हमत करते तो हम भी तौरात में उस मकतूब को देख लेते। इन हज़रात से बईद नहीं है कि येह कहें कि येह तहरीफ़ से पहले की तौरात में लिखा था। अलबत्ता उनसे पूछा जा सकता है कि तुम इस बात से कहाँ से वाक़िफ़ हो गए?

"झूठ बोलने वालों पर ख़ुदा की लअ्नत हो"

चन्द नमूने सुन्नी बुज़ुर्ग उलमा के बारे में

मज़्मून के ख़ात्मे पर चन्द बुज़ुर्ग सुन्नी उलमा के सिलसिले में उनकी मौत पर अज़ादारी के नमूने मुलाहेज़ा फ़रमाएँ।

(१) अबू यूअ्ला (३४६ हि.) - अब्दुल मोअ्मिन बिन

ख़लफ़, मज़हबे ज़ाहिरीया के फ़ुक़हा और मकतबे मोहम्मद बिन दाऊद के पैरवों में से है। ज़हबी ने उसे इल्मे हदीस और रवायात में अह्ले सुन्नत में इमाम का मर्तबा दिया है, उसकी तदफ़ीन के बारे में कहता है :

"जब मैंने अ़ब्दुल मोअ़्मिन की तशीए़ जनाज़ा में शिरकत की तो तब्ल-ओ-ढोल की ऐसी सदाएँ कान तक पहुँचीं कि गोया कोई लश्कर शहरे बग़दाद पर हमला कर रहा हो। येह मरासिम जारी रहे यहाँ तक कि नमाज़े मय्यत का वक़्त आ गया।"

(सियरे अअ़्लामुन्नबला, जि.१५, स.८१)

मज़कूरा बाला मतालिब उन लोगों की रद्द में है जो ख़याल करते हैं कि शीओं के दस्तए अ़ज़ादारी में तब्ल-ओ-ढोल और बअ़्ज़ दूसरे वसाएल सफ़वी दौर में राएज हुए हैं, जबकि येह वाक़ेआ तीसरी और चौथी सदी हिजरी का है।

(२) जुवैनी (४७८ हि.) - ज़हबी ही ने जुवैनी के मरासिमे अ़ज़ादारी के बारे में लिखा है :

"पहले उन्हें उनके घर में दफ़्न किया फिर उनके पैकर को मक़बरतुल हुसैन मुन्तक़िल किया। उसके सोग-ओ-मातम में उसके मिम्बर को तोड़ डाला, बाज़ारों को बन्द कर दिया और कसरत से मरसिया पढ़ा उनके चार सौ शागिर्द थे जो उनसे तलबे इल्म करते थे, उन्होंने अपने उ़स्ताद के सोग में अपने क़लम और क़लमदानों को तोड़ दिया और एक साल की मुद्दत तक अ़ज़ादारी की अ़लामत के तौर पर अपने सर से अ़मामों को उतार दिया और पूरे शहर में नौहा ख़ानी-ओ-मरसिया ख़ानी करते रहे, ख़ूब फ़रियाद-ओ-जज़्अ़-ओ-अ़ज़ादारी किया और इस मुद्दत में किसी की जुरअत न हुई कि अ़मामा सर पर रखें! तलबा शहर में घूमते और फ़रियाद-ओ-गिरिया-ओ-सैहा के साथ नौहा सराई करते थे।"

(सियरे अअ़्लामुन्नबला, जि.१५, स.८१)

इनके अ़लावा इब्ने अ़साकिर (मुतवफ़्फ़ा ५७१ हि.) और इब्ने जौज़ी (मुतवफ़्फ़ा ५९७ हि.) की मौत पर अ़ज़ादारी को नक़्ल किया गया है।

"अपना कोई मरता है तो रोते हैं तड़प कर।"

इस्लामी दुनिया में इन तारीख़ी शवाहिद से पता चलता है कि फ़ितरतन अ़ज़ादारी बरपा होती रही है। क़ुरआन-ओ-हदीस से और ख़ुद सुन्नते पैग़म्बर सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम से भी अ़ज़ादारी का पता चलता है। ख़ात्मे पर उन चन्द बुज़ुर्गो के नाम नक़्ल कर रहे हैं जिनके लिए ख़ुद पैग़म्बरे सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम ने गिरिया किया है।

१) पैग़म्बर सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम का गिरिया अपने बेटे इब्राहीम की मौत पर।

२) पैग़म्बर सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम का अपने वालिदा की क़ब्र पर रोना और आँसू बहाना और दूसरों को रुलाना।

३) पैग़म्बर सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम का गिरिया फ़ातेमा बिन्ते असद सलामुल्लाह अ़लैहा की रेहलत के मौक़ेअ़ पर।

४) पैग़म्बर सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम का गिरिया शहादते हमज़ा पर।

५) पैग़म्बर सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम का गिरिया जअ़्फ़र इब्ने अबी तालिब की शहादत पर।

६) पैग़म्बर सल्लल्लाहो अ़लैहे व आलेही व सल्लम का गिरिया ज़ैद बिन हारिस की शहादत पर।

..... सफ़हा न॰ २६ पर

इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम का करम अपने ज़ाएरीन पर

ख़ुदावन्द आलम ने क़ुरआन करीम का एक अच्छा ख़ासा हिस्सा दास्तानों को नक़्ल करने का रखा है। उम्मतों का तज़्केरा, अम्बिया-ओ-मुरसलीन अलैहिमुस्सलाम का तज़्केरा और हर दास्तान में दुरूस रखे हैं। येह दुरूस जो वाक़ेआत से हासिल होते हैं इन्सानी फ़ितरत को झिंझोड़ते हैं और अक्सर उसकी हेदायत का सबब भी बन जाते हैं। ख़ुदावन्द आलम ने मुतअद्दिद आयात में ऐसे वाक़ेआत नक़्ल करने की सिफ़ारिश भी की है। उन में से एक सूरह मुबारेका अअ्राफ़ की आयत १७६ है जिसमें सराहतन वाक़ेआत को नक़्ल करने का हुक्म दिया गया है। फ़रमाने रब्बुल इज़्ज़त है :

"(ऐ रसूल!) फिर आप उनके लिए क़िस्सों को बयान करें शायद वोह ग़ौर-ओ-फ़िक्र करने लगें।"

मअ्लूम येह हुआ कि वाक़ेआत को नक़्ल करना ऐ़ने मुताबिक़ हुक्मे ख़ुदा है, सुन्नते ख़ुदा और रसूल है और उससे मुर्दा दिलों को ज़िन्दा किया जाता है। और ज़रख़ेज़ ज़मीन यअ्नी नफ़्से इन्सानी को क़ुदरती तवानाई एनायत करता है। इसीलिए हम ने हज़रत इमाम जअ्फ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम की हदीसे शरीफ़, जिसके रावी अब्दुल्लाह बिन तहान हैं, उसको क़ारेईन की ख़िदमत में पहुँचाने का शरफ़ हासिल किया है। हज़रत अलैहिस्सलाम ने इर्शाद फ़रमाया :

"क़यामत के दिन हर एक येह तमन्ना करेगा कि काश वोह इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम का ज़ाएर होता। क्योंकि हर एक उस दिन ख़ुदा की बारगाह में ज़ब्बारे हुसैन अलैहिस्सलाम की इज़्ज़त-ओ-करामत का मुशाहेदा करेगा।"

(कामिलुज़्ज़ेयारात, फ़.५०, ह.१, स.४४१)

क़ारेईन, येह एक हक़ीक़त है कि हमारे तमाम अइम्मए मअ्सूमीन अलैहिमुस्सलाम अपने चाहने वालों और ख़ुसूसन ज़ाएरों से बेपनाह मोहब्बत करते हैं। ज़ैल में हमारा इन वाक़ेआत और दास्तानों के नक़्ल करने के मुन्दर्जा ज़ैल मक़ासिद हैं :

१) हमारे इस अमले ख़ैर में तेज़ी का सबब हो।

२) हज़रत अइम्मए मअ्सूमीन अलैहिमुस्सलाम के चाहने वालों और ज़व्वारों की इज़्ज़त-ओ-वक़ार हमारी नज़रों में बढ़ जाए और हम किसी एक को भी हेक़ारत की नज़र से न देखें बल्कि हर एक दूसरे को अपने से अच्छा जानें और मानें।

३) हम सब ख़ुदावन्द आलम की ख़िदमत में इन अइम्मए मअ्सूमीन अलैहिमुस्सलाम के मानने वाले होने का तहे दिल से शुक्रिया अदा करें ताकि हमारी इस मोहब्बत-ओ-वेलायत में रोज़ ब रोज़ एज़ाफ़ा होता रहे।

"अगर तुम शुक्रिया अदा करोगे तो हम नेअ्मत में ज़रूर एज़ाफ़ा करेंगे।"

(सूरह इब्राहीम, आयत ७)

क़ारेईन, ज़ैल में हम वाक़ेआत को न सिर्फ़ मोअ्तबर किताबों से बाहवाला नक़्ल करेंगे बल्कि उनसे हासिल

होने वाले दुरूस पर भी ग़ौर-ओ-फ़िक्र करेंगे।

पहला वाक़ेआ

आक़ाए अब्दुर्रसूल ख़ादिमे सैयदुश्शोहदा इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम ने मरहूम अब्दुल हुसैन से नक़्ल किया है एक रात मैंने एक अरब को नंगे पैर ख़ून आलूद ज़ख़्म से भरे हुए पैर के साथ ज़रीहे अक़दसे इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम से लिपटे हुए देखा। मैंने उससे गुफ़्तुगू की और बिल आख़िर इस डर से कि कहीं इसके ज़ख़्म-ओ-ख़ून की वजह से हरमे मुक़द्दस आलूदा और नजिस न हो जाए उसे हरमे मुतह्हर से बाहर जाने पर मजबूर किया। उस शख़्स ने हरम से मुख़ातब होकर कहा "या हुसैन! मैंने सोचा था कि येह आप का घर है लेकिन मअ्लूम येह हुआ कि किसी और का घर है।" उसी रात उन्होंने ख़ाब देखा कि इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के सह्न में सरसब्ज़ मिम्बर है और अरवाहे मोअ्मिनीन उनके सामेईन में से हैं। हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम अपने ख़ादिमों से शिकायत कर रहे हैं कि मरहूम सैयद अब्दुल हुसैन खड़े हुए और इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम से बाइज्ज़-ओ-पशेमानी गुज़ारिश किया मौला हम से क्या बेअदबी-ओ-बेएह्तेरामी-ओ-गुस्ताख़ी हुई? हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया "आज की रात मेरे अज़ीज़ तरीन मेहमान को मेरे हरम से बाहर भेज दिया गया। मैं तुम से राज़ी नहीं हूँ और न ही ख़ुदावन्द आलम तुम से राज़ी है जब तक तुम उसे राज़ी न कर लो।" उन्होंने फ़रमाया कि आक़ा-ओ-मौला मैं उसे पहचानता भी नहीं हूँ और मअ्लूम नहीं वोह कहाँ है। हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि फ़िलहाल वोह हसन पाशा के घर ख़ैमा गाह के पास आराम कर रहा है। उसको मुझसे काम था वोह येह कि वोह अपने बेटे की शेफ़ा चाहता था वोह मैंने अता कर दी है। कल क़बीले वालों के साथ आएगा उसका बहुत अच्छे से इस्तेक़बाल करना। मरहूम अब्दुल हुसैन नींद से बेदार हुए, कुछ ख़ादिमों को साथ लिया और उस जगह पहुँचे। उस शख़्स से मुलाक़ात की, उसका हाथ चूमा, उज़्र ख़ाही की, अपने घर ले गए, मेहमान नवाज़ी की। दूसरे दिन फिर वोह शेफ़ा याफ़्ता बच्चे के साथ (जिस पर फ़ालिज का असर हो गया था) दूसरे क़ाफ़िले वालों के साथ हरम में भी आया उसका बहुत अच्छे से ख़ैर मक़दम किया।

(दास्तानेहाय शगुफ़्त, स.१६४)

क़ारेईन, मुलाहेज़ा फ़रमाया आप ने इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम हर ज़ाएर पर पूरी पूरी नज़र रखते हैं। उसकी रहाइशगाह से भी वाक़िफ़ हैं। उसके साथ होने वाले सुलूक़ से भी आगाह हैं। ज़रा सी दिल शिकनी ज़ाएर की हज़रत को न सिर्फ़ येह कि गवारा नहीं बल्कि हज़रत की और ख़ुदावन्द आलम की नाराज़गी का सबब है। हम सब को येह सोचने पर मजबूर करता है कि ज़ाएर का न सिर्फ़ एह्तेराम करें बल्कि बेएह्तेरामी न करें और ख़ुद भी मुअद्दब रहें और ज़ाएरीन की एहानत न करें।

दूसरा वाक़ेआ

फ़ाज़िले जलीलुल क़द्र आख़ून्द मौला अली मोहम्मद तालेक़ानी ने हरमे मुक़द्दसे इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के बुज़ुर्ग सादात मुजाविर से नक़्ल किया है कि एक क़ाफ़िले वाले ने उन से नक़्ल किया कि ज़ियारते इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के लिए मैं काफ़िले के साथ अपनी ज़ौजा के हमराह ईरान से रवाना हुआ। मेरी ज़ौजा की बीमारी की वजह से उन लोगों ने मुझे "क़रनतीना" में छोड़ दिया जहाँ मेरी ज़ौजा का ज़चगी के दौरान इन्तेक़ाल हो गया। ज़ौजा

के कफ़न-ओ-दफ़न के बअ्द मैंने नौमौलूद बच्चे को साथ लिया और चल पड़ा। क्योंकि एलाक़ा अह्ले सुन्नत का मुतअस्सिब एलाक़ा था लेहाज़ा किसी दाया का इन्तेज़ाम भी नहीं हो सका। और बच्चा भी नौमौलूद था पिस्तान के अलावा किसी और चीज़ को क़बूल भी नहीं कर रहा था। शिद्दत से गिरिया-ओ-ज़ारी कर रहा था। जितना तसल्ली देने की कोशिश कर रहा था उतना ज़्यादा वोह गिरिया करता था। आख़िर मैंने सोचा कि बच्चा है ख़ाली पिस्तान और भरे हुए पिस्तान में फ़र्क़ थोड़ी कर पाएगा। मैंने अपना पिस्तान उसके मुँह में देने की कोशिश की कि शायद ख़ामोश हो जाए। बच्चे ने उसे अपने मुँह में ले लिया और चूसने लगा। ख़ामोश हो गया। थोड़ी देर बअ्द जब मैंने ग़ौर से देखा तो ऐसा मअ्लूम होता है कि जब वोह मुँह चलाता है तो कोई चीज़ उसके मुँह से बाहर निकल रही है। मैंने अपने पिस्तान से बच्चे का मुँह निकाला और बातअज्जुब मुशाहेदा किया कि मेरे पिस्तान से दूध जारी है। मुझे यक़ीन हो गया कि इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम ने अपने फ़ज़्ल-ओ-करम से अपने नन्हे ज़ाएर के लिए रिज़्क़ का इन्तेज़ाम कर दिया है। येह सिलसिला काज़मैन और सामर्रा में भी जारी था यहाँ तक कि मैं बच्चे को लेकर करबला पहुँचा। वहाँ जब मैंने बच्चे के मुँह में अपना पिस्तान दिया तो अब दूध आना बन्द हो गया था। मैं समझ गया कि रिज़्क़ का इन्तेज़ाम इसलिए था कि कोई क़ाबिले क़बूल-ओ-एअ्तेमाद दाया का इन्तेज़ाम मुमकिन नहीं था। अब करबला में क्योंकि येह मुमकिन है कि पाक दामन बामोहब्बत-ओ-वेलायत दाया मिल जाएगी लेहाज़ा अब दूध आना बन्द हो गया और दाया का इन्तेज़ाम भी हो गया।

(किताब दारुल इस्लाम, इराक़ी, स.५०६)

क़ारेईन, मुलाहेज़ा फ़रमाया आप ने हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम अपने एक एक ज़ाएर का बिल्कुल वैसे ही ख़याल रखते हैं जैसे ज़िन्दगी में रखते थे। शायद दुनिया वाले ज़िन्दा रह कर भी अपने मेहमान का उतना ख़याल न रख पाएँ जितना ख़याल हज़रत अइम्मा मअ्सूमीन अलैहिमुस्सलाम रखते हैं। लेहाज़ा बिला झिजक रास्तों की सऊबतों का ख़याल न करते हुए ज़ियारत का एरादा करना चाहिए और येह वाक़ई दुनिया-ओ-आख़ेरत की सआदत का बेहतरीन सरमाया है वालेदैन के लिए भी और बच्चों के लिए भी। बच्चों को अपने साथ ज़ियारत पर ले जाना चाहिए। ख़ुदावन्द आलम हम सबको अपने वालेदैन और बीवी बच्चों के साथ जल्द अज़ जल्द और बार बार अइम्मए मअ्सूमीन अलैहिमुस्सलाम की ज़ियारत की तौफ़ीक़ एनायत करे।

तीसरा वाक़ेआ

जनाब सुलेमान बिन अअ्मश से रवायत मिलती है कि आप नक़्ल करते हैं कि कूफ़ा में मेरा एक पड़ोसी था मैंने एक रोज़ उससे सवाल किया क्यों तुम ज़ियारते इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के लिए नहीं जाते? जवाब में उसने अर्ज़ किया इसलिए कि (**नऊज़ोबिल्लाह मिन ज़ालेक**) वोह बिदअत है और हर बिदअत गुमराही है और उसका करने वाला जहन्नमी है। मैंने जब उससे येह सारी चीज़ें सुनी तो वहाँ से उठ खड़ा हुआ और अपने घर आ गया। शबे जुमअ् में सोचा कि सुब्ह जाकर उस पड़ोसी को फ़ज़ाएले हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की हदीसें सुनाउँगा ताकि उसकी ग़लत फ़हमियाँ दूर हो जाएँ और वोह राहे रास्त पर गामज़न हो जाए। मैं उसके घर पहुँचा तो घर वालों ने बताया कि वोह कल रात ज़ियारते इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम

के लिए करबला गए हैं। मुझे तअज्जुब हुआ और मैं भी जल्दी तैयार होकर करबला की तरफ़ रवाना हो गया। वहाँ पहुँचा तो देखा वोह रूकूअ्-ओ-सुजूद में मसरूफ़ है और बिल्कुल थकान के असरात उससे ज़ाहिर नहीं हैं। मैंने उससे पूछा "तुम ने तो मुझे ज़ियारते इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के क़ाएल होने पर नाज़ेबा अल्फ़ाज़ कहे थे।" उसने जवाब दिया "ऐ मेरे दोस्त! तुम सहीह कह रहे हो। उस वक़्त तक मेरा अक़ीदा वही था। पिछली रात (शबे जुमअ्) मैंने ख़ाब में हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम, हज़रत अमीरुल मोअ्मेनीन अलैहिस्सलाम तमाम अम्बिया और हज़रात अइम्मए मअ्सूमीन अलैहिमुस्सलाम को देखा कि सब इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की ज़ियारत के लिए आए हुए हैं और उनके साथ एक अमारी भी है। मैंने दरियाफ़्त किया इस अमारी में कौन है जवाब मिला कि हज़रत फ़ातेमा ज़हरा सलामुल्लाह अलैहा हैं जो अपने बेटे की ज़ियारत के लिए आईं हुईं हैं। मैं अमारी के क़रीब पहुँचा तो देखा कि उससे मुस्तक़िल काग़ज़ का रुक़्आ निकल रहा है। मैंने रुक़्आ के लिए दरियाफ़्त किया तो जवाब मिला कि येह रुक़्आ ज़ाएरीने इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के लिए शबे जुमअ् में ख़ुदा के अज़ाब से अमान का रुक़्आ है। इसी दरमियान मुनादी की नेदा भी सुना कि हम और हमारे शीआ बलन्द तरीन दर्जाते बेहिश्त में होंगे। मैंने सवाल किया कि येह लोग कौन हैं जवाब मिला हज़रत पैग़म्बरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम तमाम अम्बिया-ओ-मअ्सूमीन अलैहिमुस्सलाम। जब मैंने इन मनाज़िर का मुशाहेदा किया तो फ़ौरन नींद से बेदार हुआ और यहाँ आकर तौबा-ओ-गिरिया-ओ-ज़ारी की और अपने आप से वअ्दा किया अब जब तक ज़िन्दा रहूँगा इस अमले ख़ैर से ग़ाफ़िल नहीं रहूँगा। सुलेमान बिन अअ्मश फ़रमाते हैं मैंने भी उसे बहुत दुआएँ दीं और रुख़्सत चाही अपने घर वापस आया।

(तोह्फ़तुल मजालिस, स.२१२)

क़ारेईन, मुलाहेज़ा फ़रमाया आप ने आज भी रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम की ग़ैराँक़द्र हदीस **"इन्नल हुसैना मिस्बाहुल हुदा व सफ़ीनतुन्नजाह"** मुन्केरीन ज़ियारत में शौक़े ज़ियारत पैदा कर देती है।

इसलिए शबे जुमअ् हमें हमारे आबा-ओ-अज्दाद (ख़ुदा उन पर रहमत नाज़िल करे) ने मजालिस का एह्तेमाम और ज़ियारते वारिसा पढ़ने की ताकीद की है। ख़ुदावन्द आलम की बारगाह में दस्त ब दुआ हैं कि हमें उन पर अमल करने और ताहयात ज़ियारत की तौफ़ीक़ बीवी बच्चों और वालेदैन के साथ एनायत फ़रमा। आमीन।

चौथा वाक़ेआ

रवायत है कि शहरे मूसल में एक तबीब (हकीम) रहता था जो ज़मानए इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम में न सिर्फ़ येह कि हज़रत की इमामत का क़ाएल नहीं था उसने हज़रत का इम्तेहान लिया और उसके बअ्द हज़रत की इमामत का क़ाएल हुआ। अपना वाक़ेआ यूँ बयान करता है कि मेरे पड़ोस में हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम को चाहने वाली एक बेवा रहती थी जो बीमार हुई तो अपने यतीम बच्चे को मेरे पास भेजा। उसने वालेदा की कैफ़ीयत बताया तो मैंने उससे कहा दवा मैं बना दूँगा और वोह सेहत याब भी हो जाएगी लेकिन मुझे फुलाँ रंग के घोड़े का बिल्कुल ताज़ा जिगर चाहिए होगा। इस बेचारे ने उज़्र ख़ाही की कि मैं कहाँ से ला सकूँगा। तो मैं (हकीम) ने

कहा तेरे आका इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के पास जा और सवाल करके देख क्या वोह तेरी मदद कर सकते हैं। लड़का हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में पहुँचा और बात रखी। हज़रत ने फ़ौरन उसी रंग का घोड़ा मँगवाया उसके सामने ज़िब्ह किया और उसका जिगर निकाल कर दे दिया। येह यतीम मेरे पास लेकर आया। मुझे तअज्जुब हुआ लेकिन मैंने उसे यके बअ्द दीगरे कुल पाँच बार अलग अलग ख़ुसूसीयात के घोड़े के जिगर लाने को कहा और वोह सब के सब यके बअ्द दीगरे इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम से लेकर हाज़िर हुआ। मुझे बड़ा तअज्जुब हुआ और इस सख़ावते करीमाना से मैं इतना मुतास्सिर हुआ कि उस यतीम के साथ हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर होकर अपने आप को उन पर गिरा दिया। उनकी इमामत का क़ाएल हो गया। उस वक़्त हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम मुझे वहाँ ले गए जहाँ वोह पाँचों घोड़ों के लाशे पड़े थे। और मुझे मुख़ातब होकर फ़रमाया येह तो आसान अम्र था, मैं तुझे उससे भी अफ़ज़ल फ़ेअ्ल बताता हूँ येह कहकर हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम ने इन घोड़ो की लाशों के किनारे खड़े हुए हाथों को आसमान की तरफ़ बलन्द किया परवरदिगार तेरी रज़ा के मुताबिक़ तेरे बन्दे की ख़ातिर इन घोड़ों को ज़िब्ह किया था। और तू इस बात पर क़ादिर है कि इन सबको दोबारा ज़िन्दा कर दे। अगर मेरे आबा-ओ-अज्दाद तेरे नज़्दीक बाइज़्ज़त-ओ-वक़ार हैं तो तुझे हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम, मेरे वालिद अली इब्ने अबी तालिब अलैहेमस्सलाम, और मेरी वालेदा फ़ातेमा ज़हरा सलामुल्लाह अलैहा, और मेरे भाई हसन मुज्तबा अलैहिस्सलाम का वास्ता इन घोड़ों को दोबारा ज़िन्दा कर दे। अभी हज़रत की दुआ ख़त्म नहीं हुई थी कि पाँचों घोड़े दोबारा ज़िन्दा हो गए और मैं वाक़ेअन येह सब देखकर अपने कहे पर पशेमान हुआ और सिद्क़े दिल से हज़रत की इमामत पर ईमान ले आया।

(तोह्फ़तुल मजालिस, स.१८८)

क़ारेईन, मुलाहेज़ा फ़रमाया आपने यूँ तो उन लातअ्दाद वाक़ेआत में से कुछ थे जिन्हें उलमा ने अपनी ग़ेराँक़द्र किताबों में नक़्ल करके हम तक पहुँचाया है। आज भी ज़ाएरीन और हज़रात अइम्मए मअ्सूमीन अलैहिमुस्सलाम के चाहने वाले नज़्दीक से या दूर से हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम से लौ लगाकर अपनी जाएज़ और उनके हक़ में बेहतर हाजतों को हासिल करते हैं। हम सब की इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के वास्ते से ख़ुदावन्द मुतआल से दस्त बदुआ हैं कि उनके मुन्तक़िमे ख़ून हज़रत इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम के ज़हूर में तअ्जील फ़रमाए और हम सब को उन के साथ मिलकर पहले मदीना में अह्लेबैते रसूल पर किए गए मज़ालिम का बदला लेने की तौफ़ीक़ एनायत करे फिर तमाम अइम्मए मअ्सूमीन अलैहिमुस्सलाम पर किए गए मज़ालिम का बदला लेने की तौफ़ीक़ एनायत फ़रमाए। जब तक ज़िन्दा रखे हज़रात अइम्मए मअ्सूमीन अलैहिमुस्सलाम की ज़ियारत से मुशर्रफ़ फ़रमाए, आख़ेरत में उनकी शफ़ाअत और क़ुर्बत एनायत फ़रमाए। आमीन।

क़तरए नजात

आज से कई हज़ार साल क़ब्ल इस कारज़ारे हस्ती पर जब बशरीयत का शजर उगाया गया, जिसकी शाख़ें ज़मीन नहीं बल्कि आसमान में पैवस्त थीं, वोह हेदायत-ओ-रहबरी का शजर जिसको तमाम मख़्लूक़ के लिए परवरदिगार ने साया क़रार दिया था, वोह हस्तियाँ अम्बिया-ओ-मुरसलीन अलैहिमुस्सलाम थीं। येह वोह सिलसिला था जिसकी इब्तेदा जनाबे आदम अलैहिस्सलाम से हुई उसी के ज़ेरे साया बनी आदम की कश्तिए नजात का सफ़र होना था जनाबे आदम से लेकर जनाबे ख़ातम तक अम्बिया अलैहिमुस्सलाम ने हत्तल इम्कान कोशिश की और नजाते इन्सानी का रास्ता वाज़ेह और रोशन करते रहे।

अगर लुग़त की तरफ़ रुजूअ् करें तो क़तरा के मअ्ना हैं क़लील, मुख़्तसर, जो कि किसी कसीर से मिलने के बअ्द उसमें शामिल हो जाता है। यअ्नी उसका ख़ुद का वजूद मुख़्तसर है लेकिन जब किसी से मुन्सलिक हो अपनी हालत तब्दील कर लेता है।

नजात है क्या और क्यों उसको रखा गया? येह क़ाबिले ग़ौर बात है कि इन्सान जब दुनिया में भेजा गया तो इस इन्सान के साथ एक और शख़्सीयत जो "अदूवे मुबीन" के नाम से जानी जाती है वोह भी मौजूद थी और जिसने अपने हर्बे इस्तेअ्माल करना शुरूअ् कर दिए थे जिसका ख़मियाज़ा जनाबे आदम अलैहिस्सलाम और जनाबे हव्वा को जन्नत से निकल कर देना पड़ा।

परवरदिगार अपनी मख़्लूक़ से बहुत मोहब्बत करता है लेहाज़ा उसे इनको सज़ा देना पसन्द नहीं उसने जन्नत-ओ-जहन्नम ख़ल्क़ तो किए लेकिन उसका इरादा यही था कि मेरी तमाम मख़्लूक़ नजात हासिल करे और जन्नत उनका अबदी मसकन हो। लेकिन उसके इल्म में येह भी था कि येह "अदूवे मुबीन" यअ्नी इब्लीस और इब्लीसियत के कारिन्दे हरगिज़ हरगिज़ उसकी ख़ूशबू नहीं सूँघ पाएँगे और ख़ुद के साथ साथ दीगर को भी इससे दूर ले जाएँगे। इसलिए ज़ाते करीम का येह फ़ज़्ल था कि उसने इब्लीसियत के शर से बचने के लिए मुन्जी यअ्नी अम्बिया-ओ-औसिया अलैहिमुस्सलाम भेजे।

इस नजात दिलाने के सफ़र में अम्बिया-ओ-औसिया अलैहिमुस्सलाम ने बड़ी मेहनतें कीं और कई सऊबतें बर्दाश्त कीं। लोगों को अल्लाह की एबादत की तरफ़ मुतवज्जेह करवाया। उसकी रज़ामन्दी और नाराज़गी को लोगों के सामने पेश किया जिस पर अमल पैरा होकर लोग ख़ुदा की ख़ुशनूदी हासिल कर सकें और हलाकत से महफ़ूज़ हो सकें।

इसी नजात दिलाने के सफ़र में हुज्जते ख़ुदा ने कभी पत्थर खाए, लोगों के ज़ुल्म बर्दाश्त किए, आग में फेंके गए, क़ैद-ओ-बन्द की सऊबतें बर्दाश्त कीं, फ़ाक़ा किए, घर लुटा, क़त्ल हुए लेकिन मक़सद एक था कि लोगों को हेदायत मिल जाए, ख़ुदा का दीन उनके दिलों में पैवस्त हो जाए और वोह कामियाब हो जाएँ।

गुज़श्ता तमाम अम्बिया अलैहिमुस्सलाम ने जो तब्लीग़े दीने में मेहनत की थी, सरदारे अम्बिया ने उसको यकजा करके एक साथ दुनिया वालों के सामने एक कामिल दीन, दीने इस्लाम की शक्ल में पेश किया जो कि क़ुरआने करीम के मुताबिक़ परवरदिगार का पसन्दीदा दीन है। ख़ुद सरकारे ख़त्मी मरतबत सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम की मेहनत और गुज़श्ता तमाम अम्बिया अलैहिमुस्सलाम की मेहनत का निचोड़ इस दीने इस्लाम में मौजूद था।

एअ्लाने ग़दीर के बअ्द अब लोगों पर हुज्जत तमाम थी कि दीन मुकम्मल हो चुका है और जो तअ्लीमात पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम ने बयान की हैं बस वही दीन का हिस्सा हैं और जो लोग उस पर अमल पैरा होंगे बस उन्हीं की नजात मुमकिन है। लेहाज़ा तमाम फ़ुरूअ् अब सिर्फ़ इस शर्त के साथ क़बूल होंगे कि वोह इर्शादाते पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम और क़ुरआन के मुताबिक़ होंगे। तब जा के वोह मौज़ूअ् कि जिसका हम तज़्केरा कर रहे हैं, नजात मुमकिन हो पाएगी।

आइये अब अपने ज़ाविये को बदलें, हम देखें कि बअ्दे रसूल सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम क्या वोह सवा लाख अम्बिया अलैहिमुस्सलाम की कई सौ साला मेहनत का इस्तेहसाल नहीं होने लगा था।

धीरे धीरे आहिस्ता आहिस्ता वही इब्लीस और इब्लीसियत उसे अन्दर से खोखला नहीं करने लगी थी लोग ख़ुदा की फ़रमाँबरदारी और नाफ़रमानी के इम्तेयाज़ को भूलते जा रहे थे। और होता भी क्यों न जबकि जानशीने पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम से हटकर दीन को हासिल करने की क़वाएद आम हो गई थी। दीन सड़कों और चौराहों पर नीलाम होने लगा था। हुक्मराने इस्लाम माल-ओ-दौलत और इक़्तेदार के भूके हो चुके थे। पासबाने इस्लाम नज़र बन्द किए जा चुके थे।

गोया राहे नजात ग़ैर मुमकिन और ग़ैर मअ्रूफ़ हो चुकी थी। क्या ऐसे माहौल में जहाँ लोगों के दिल झूठ, चोरी, ज़ुल्म, हक़तल्फ़ी और न जाने कितनी कसाफ़तों से पुर हो चुके थे, नजात पा सकते थे? क्या ऐसे माहौल में हेदायत की एक किरन काफ़ी थी जो एक मख़्सूस एलाक़े को रोशन करती या कि पूरा आफ़ताब चाहिए था जो इस काएनात को रोशन करे और रोशन ही न करे बल्कि बातिल परस्तों की आँखों को ख़ीरह कर दे और नजात के ख़ाहिशमन्दों को ज़ुल्मात से निकाल कर नूर में ले आए।

वोह आफ़ताब कि जिसकी तमाज़त अह्ले बातिल को झुल्सा दे और अह्ले हक़ के क़ुलूब को ठंडक बख़्शे वोह हस्ती वोह कश्तिए नजात इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम थे जो कि यज़ीद जैसे मलऊन, कि जिस ने इब्लीस के दीन को दीने इस्लाम से पलटने की पूरी तैयारी कर ली थी, उसको नाबूद करने वाले थे।

अब एक तरफ़ तमाम अम्बिया-ओ-औसिया अलैहिमुस्सलाम की मेहनतें थीं जिसके वारिस इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम थे यअ्नी जिसको जनाबे आदम अलैहिस्सलाम की मेहनत देखनी थी तो वोह इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम को देखता, जिसे जनाबे इब्राहीम अलैहिस्सलाम की मेहनत देखना थी वोह इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम को देखता, जिसे जनाबे नूह अलैहिस्सलाम की मेहनत देखना थी वोह इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम को देखता, जिसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम की मेहनत को देखना होता तो वोह इमाम हुसैन सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम को देखता, गोया इमाम हुसैन तमाम अम्बिया-ओ-औसिया अलैहिमुस्सलाम की मेहनतों का मुजस्समा थे। वोह अम्बिया अलैहिमुस्सलाम कि जो नजात दिलाने आए थे जिनका वजूद परवरदिगार की याद का बाएस था, उनका अक्स इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम में था।

अगर इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम उस वक़्त अपनी और अपने अह्ल-ओ-अयाल-ओ-अस्हाब की क़ुर्बानी न देते तो वोह ज़ुल्मात के बादल जो आहिस्ता आहिस्ता तेज़ होते जा रहे थे वोह बह्रे ज़ुल्मात से मुल्हिक़ होकर ऐसा सैलाब बरपा करते कि जिसमें आलमे बशरीयत ग़र्क़ हो जाता।

इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के क़ुर्बानी देते ही वोह सर जो शैतानीयत की सज्दागाहों पर सर ख़म किए हुए थे उनके सर फिर ख़ानए ख़ुदा की जानिब मुड़ गए वोह सतरें जो

हक़ को बातिल और बातिल को हक़ लिख रही थीं, इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के लहू की छींटों ने उन्हें मिटा कर रख दिया। और फिर ग्यारह मोहर्रम को जो सूरज उफ़ुक़ पर नमूदार हुआ वोह येह कहता हुआ नमूदार हुआ कि इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम ही कश्तिए नजात हैं।

अब क़ारेईन केराम की नज़रें हम अपने उन्वान पर मब्ज़ूल करवाना चाहते हैं कि वोह क़तरए नजात यअ़्नी वोह एक आँसू जो सरकारे सैयदुश्शोहदा अलैहिस्सलाम के ग़म में निकला। दर अस्ल उस एक आँसू के पस मन्ज़र में नजात की पूरी काएनात पिन्हाँ है।

रोना या गिरिया करना एक रूए सदाक़त है येह ख़ुदा की तरफ़ से दी हुई फ़ितरत में एक चिराग़ एक रोशनी की हैसीयत रखता है, जब बच्चा रोता है तो वालेदैन समझ जाते हैं कि उसे कोई हाजत है या कोई तक़लीफ़ है। रोना जब तक़ाज़ए फ़ितरत है तो जैसे जैसे अ़क़्ल आगे बढ़ती है उसे इस बात का एह्सास होने लगता है कि कब रोना है, क्यों रोना है। ज़ालिम कभी नहीं रोता लेकिन मज़लूम के लिए आँसू ज़रूर निकलते हैं।

लेकिन इन्हीं आँसुओं ने पूरी एक क़ौम की तश्कील दी और सदाक़त का एक ऐसा महल तअ़्मीर कर दिया जिसकी बुनियादें रोज़े क़यामत तक टस से मस होने वाली नहीं थीं। और इन्हीं आँसुओं ने येह साबित कर दिया कि मज़लूम कौन है और कौन ज़ालिम, दीन का निगहबान कौन है और दीन का मुख़ालिफ़ कौन है।

एक क़ौम पैदा हुई क़ौले रसूल सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम की सदाक़त का एअ़्लान करती हुई बहुत ही क़लील तअ़्दाद में। वोह क़ौम गिरिया कुनाँ हुई जब जिगर गोशाए रसूल सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम जनाबे ज़हरा सलामुल्लाह अलैहा का मुक़द्दस घर जलाया गया जिससे उनकी शहादत वाक़ेअ़् हुई और उसके बअ़्द आप सलामुल्लाह अलैहा ७५ या ९० दिन ज़िन्दा रहीं। क्या वोह गिरिया कुनाँ क़ौम जो नेहायत क़लील तअ़्दाद में थी क्या ख़त्म हो गई या बढ़ती गई। वसीये रसूल सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम की मस्जिदे कूफ़ा में शहादत वाक़ेअ़् हुई। सदाक़त का येह पहला एअ़्लान था कि येह क़ौम बढ़ती चली जाएगी इस क़ौम की आँखों से गिरे हुए आँसू दरिया का एक सरचश्मा होते जा रहे थे। इमाम हसन अलैहिस्सलाम के जनाज़े पर तीर बरसाए गए उनके कलेजे के ७२ टुकड़े तश्त में गिरे। आप अलैहिस्सलाम को अपने नाना के पह्लू में दफ़्न होने न दिया गया। इस क़ौम की आँखों से बहते हुए आँसू का दरिया अपने सरचश्मे से पहाड़ की संगीनियों को चाक करता हुआ एक सैलाब की सूरत एख़्तेयार करता हुआ अ़रब की वादियों में बहने लगा। इस दरिया का सैलाब करबला के बअ़्द बजाए थमने के कुफ़्र-ओ-ज़लालत को रौंदता हुआ ईमान की वादियों को सैराब करता रहा जो दुनिया के गोशे गोशे में रसूल सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम की पेशीनगोई की सदाक़त को फ़ैलाते हुए नजात का एअ़्लान करता रहा।

वोह एक आँसू जो ग़म में बहता है वोह एक लम्हे में आँखों से निकलकर रुख़्सार तक पहुँचता है वोह उस एक लम्हे में सवा लाख अम्बिया अलैहिमुस्सलाम की मेहनत को दर्क कर चुके होते हैं, वोह उस क़ुर्बानी को दर्क कर चुके होते हैं जो कि इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम ने दी वोह उस दीन की अहम्मीयत को दर्क कर लेते हैं जिसकी ख़ातिर इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम ने अपनी और अपने अह्ले-ओ-अ़याल-ओ-अस्हाब की जान को क़ुर्बान किया। वोह एक क़तरा इतना ख़ालिस होता है कि शायद ही कोई एबादत इतना ख़ुलूस रखती होगी।

दूसरी तरफ़ परवरदिगार के जिस दीन की हेफ़ाज़त की ख़ातिर इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम ने अपना सब कुछ लुटा दिया और उसके हक़ीक़ी दीन को लोगों के सामने आश्कार कर दिया फिर क्यों ख़ुदावन्द आलम उस पर

गिरिया का एक भी आँसू राएगाँ जाने दे।

लेहाज़ा येह उसकी रुबूबियत के शायाने शान है कि वोह पूरी काएनात को एक क़तरा आँसू के एवाज़ नजात अता करे, जो क़तरा इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के मसाएब पर रवाँ हो। क्योंकि इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम ने एक वाक़ेअए करबला से क़यामत तक लोगों के दिलों में बात सब्त कर दी कि वोह दीन जिस पर अमल पैरा होकर कामियाबी हासिल करना है, वोह दीन इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के रास्ते पर मिलेगा।

इसीलिए गिरिया का सवाब और गिरिया की अहम्मीयत है येह गिरिया-ओ-ज़ारी वोह रास्ता है जो दिलों को ख़ालिस करता है और दीन की अहम्मीयत को उजागर करता है वोह मोहब्बत कि जो अज्रे रेसालत है उसमें एज़ाफ़े का सबब बनता है।

इसलिए वोह कुतुब जो बिलख़ुसूस करबला की तारीख़ या इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम से मन्सूब हैं उनमें भी येह रवायतें आम तौर से पाई जाती हैं जैसे शेख़ जअ्फ़र शूशतरी अलैहिर्रह्मा ने अपनी किताब "ख़साएसुल हुसैनिया" में गिरिया की आठ फ़ज़ीलतें बयान की हैं जिस में से हम पाँच बयान करेंगे।

१) गिरिया हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम पर एहसान है।

२) सैयदुश्शोहदा अलैहिस्सलाम पर गिरिया करना गोया जनाबे सिद्दीक़ा कुबरा फ़ातेमा ज़हरा सलामुल्लाह अलैहा की तास्सी है कि वोह मज़लूमा रोज़ाना अपने फ़र्ज़न्दे मज़लूम पर गिरिया करती हैं। हज़रत इमाम जअ्फ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"क्या तुम येह न पसन्द करोगे कि तुम्हारा शुमार जनाबे फ़ातेमा के यार-ओ-अन्सार में हो।"

(बेहारुल अनवार, जि.४५, स.२०८)

३) इसमें कोई शक नहीं कि गिरिया पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम और अइम्मए मअ्सूमीन अलैहिमुस्सलाम के हक़ की अदाएगी है। और रवायत भी इस बात की ताईद करती है कि जिनमें येह बयान हुआ है कि हमारे मसाएब पर गिरिया करना हमारे हक़ को अदा करना है।

४) इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम पर गिरिया करना गोया हर ज़माने में आप की नुसरत करना है।

५) गिरिया उस्वए हसना और पैग़म्बराने मा सबक़ मलाएका और जुम्ला ख़ासाने ख़ुदा की मुताबेअत है।

हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़िर अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"हर वोह मोअ्मिन जो इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के क़त्ल पर आँसू बहाए और वोह आँसू उसके रुख़्सार पर बहने लगें तो अल्लाह उन्हें बेहिश्त में जगह अता फ़रमाएगा और वोह हमेशा उसमें रहेंगे।"

(बेहारुल अनवार, जि.४४, स.२८५)

हर अमल के लिए एक हद मुक़र्रर की जाती है उससे कम पर उस अमल के मक़बूल होने का इम्कान नहीं होता। लेकिन सैयदुश्शोहदा अलैहिस्सलाम पर गिरिया वोह अमल है जिसके लिए कोई हद मुक़र्रर नहीं है। इसी तरह इस अमल पर मिलने वाले सवाब की भी कोई हद मुक़र्रर नहीं है। अगर रोने वाले की आँख से अश्क जारी न हो लेकिन अगर वोह शख़्स रोने वाले की शक्ल बनाए तो उसके लिए भी वही सवाब मुक़र्रर है। येह अम्र अजाएबात में से है ऐसे इन्सान के लिए रवायतों में "फ़-तबाकी" का लफ़्ज़ इस्तेअ्माल किया गया है यअ्नी जो रोने वाले की शक्ल बनाए। गिरिया न करे लेकिन अपने सर को मुसीबत ज़दा की मानिन्द नीचे डाल दे गिरिया की आवाज़ बलन्द करे और रिक़्क़त-ओ-ग़म का तअस्सुर दे, ऐसे अफ़राद भी गिरिया के सवाब में बराबर के शरीक हैं।

यहाँ हम ने अपने मौज़ूअ् में एक क़तरा आँसू पर गुफ़्तुगू की लेकिन रवायात में रोने जैसी शक्ल बनाने को भी बराबर के अज्र-ओ-सवाब से नवाज़ा गया है। तमाम अम्बिया-ओ-अइम्मा अलैहिमुस्सलाम इस अम्र में शरीक हैं। ख़ुद इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम दिन-ओ-रात गिरिया में मशग़ूल हैं और क्यों न हों, येह अल्लाह के दीन की हेफ़ाज़त में बहाए गए एक एक क़तरए ख़ून पर गिरिया है जो ख़ुदावन्द आलम को महबूब है। दर हक़ीक़त इस सवाब का बाएस वही ख़ालिस अल्लाह की ख़ुशनूदी का शामिल होना है जिसके सबब येह सवाब हासिल हो रहा है।

हज़रत इमाम बाक़िर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया :

"जिस शख़्स की आँख से इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की मुसीबत में आँसू रवाँ हो जाएँ अगरचे मक्खी के पर के बराबर हों, ख़ुदावन्द आलम उसके गुनाह को मआफ़ कर देता है अगरचे दरिया के झाग के बराबर गुनाह हों।"

(बेहारुल अनवार, जि.४४, स.२९३)

चाहे वोह एक क़तरा हो या आँसुओं की क़तार, सदाए बुका हो या गिरिया की सूरत सवाब का मेअ्यार इख़्लास है। और वोह एक क़तरा इन्सान की नजात की सबब बन जाता है जो ग़मे हुसैन अलैहिस्सलाम में आँखों से जारी हो जाता है।

आँसू का मसकन भले ही इन्सानी आँखें हैं लेकिन येह निकलता परवरदिगार के इज़्न से ही है तो एक तरह से येह भी ज़ाहिर हो गया कि जो गिरिया करता है उस गिरिया में ख़ुदावन्द आलम की रज़ामन्दी शामिल है। और जो अमल परवरदिगार की रज़ामन्दी के साथ हो उसको अन्जाम देकर क्यों न नजात पाई जाए ख़ाह वोह कितना क़लील ही क्यों न हो यअ्नी मक्खी के पर के बराबर भी अगर हो तो वोह क़तरा, क़तरए नजात बन जाता है।

जिसके ग़म में बहाया गया एक क़तरा नजात की ज़मानत बन जाए उसे सैयदुश्शोहदा अलैहिस्सलाम कहते हैं। येह नजात का मफ़हूम तो एक जानिब है लेकिन दूसरी जानिब वोह मज़लूमियत है जिसके सबब मोअ्मिनीन के क़ुलूब हमेशा ग़मज़दा रहेंगे। ख़ुदा का शुक्र है कि उसने हमें उस क़ौम में पैदा किया जिसका मक़मद ग़मे हुसैन अलैहिस्सलाम में गिरिया-ओ-ज़ारी करना है। वोह मज़लूमियत जो मोअ्मिनीन के क़ुलूब को ता क़यामत हरारत बख़्शती रहेगी वोह ग़म कि जिसके सबब वारिसे हुसैन अलैहिस्सलाम इमामे ज़माना अलैहिस्सलाम सुब्ह-ओ-मसा आँसुओं के बदले ख़ून रो रहे हैं।

यहाँ तक कि आज दुनिया के कोने कोने में इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के सोगवार अश्कबार नज़र आते हैं। येह क़ौम जो नजात का पैग़ाम लिए नेहायत क़लील तअ्दाद से शुरूअ् हुई थी सारे आलम के कुफ़्र-ओ-ज़लालत को रौंदती हुई सारे आलम में नजात की शादाबी रोज़ ब रोज़ अपने उरूज पर बिखरते हुए अपने बलन्द-ओ-बाला मर्तबे पर फ़ाएज़ होती गई।

हम समझते हैं कि सिर्फ़ एक क़तरा आँसू है लेकिन वोह क़तरा दिल की रगों को तोड़ता हुआ अगर सामने दरिया में गिर जाए वोह भी एक दरिया की तरह अपना मक़ाम बना लेता है। किसी शाएर ने सच कहा है।

क़तरा दरिया में जो मिल जाए तो दरिया हो जाए

ऐ हर शै पर क़ुरदत रखने वाले ख़ालिक़े काएनात! हमें तौफ़ीक़ अता फ़रमा हम पर अपना लुत्फ़-ओ-करम एनायत फ़रमा इस तरह कि हमारे क़लील आँसू जो बहुत

..... सफ़हा न॰ २६ पर

हज़रत आयतुल्लाह अल-उज़्मा आक़ाए सैयद अ़ली हुसैनी सीस्तानी दाम ज़िल्लहुल अ़ाली का पैग़ामे अरबईन

हज़रत वलीये अ़स्र अलैहिस्सलाम की ग़ैबत के ज़माने में लोगों की हेदायत और रहनुमाई मराजेअ़ केराम की ज़िम्मेदारी है। हर दौर में मुख़्तलिफ़ अन्दाज़ से अ़ज़ादारिए सैयदुश्शोहदा अलैहिस्सलाम पर एअ़्तेराज़ात होते रहे हैं, अ़ज़ादारी की अहम्मीयत पर सवालात उठते रहे हैं, कभी इस्लाह के नाम से कभी तासीर-ओ-असर के नाम से कभी अ़मली फ़ाएदे के उ़न्वान से कभी इस्राफ़ के नाम से। इसमें वोह लोग तो नुमायाँ हैं ही जिनको अह्लेबैत अलैहिमुस्सलाम से कोई ख़ास लगाव नहीं है, उन ही के साथ साथ वोह लोग भी इज़्हारे ख़्याल करने लगते हैं जो अह्लेबैत अलैहिमुस्सलाम से वाबस्ता हैं। कभी अ़ज़ादारी और अश्के अ़ज़ा के सवाब पर एअ़्तेराज़ करते हैं कभी मरासिमे अ़ज़ादारी की इस्लाह का राग अलापते हैं कभी मसाएब में तारीख़ में तहक़ीक़ का सबक़ पढ़ाते हैं दोस्त बनकर अ़ज़ादारों की सफ़ों में इख़्तेलाफ़ ईजाद करके अपना एक अलग गिरोह बना लेते हैं इस तरह वोह अ़ज़ादारी जो क़ौम को मुत्तहिद और एक प्लेटफार्म पर लाने के लिए थी उसी को एख़्तेलाफ़ात का सबब क़रार देते हैं और एख़्तेलाफ़ात को इस्लाहे उम्मत का नाम देते हैं।

हम सब को ज़ेह्न में येह बात रखना चाहिए कि सैयदुश्शोहदा हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की अ़ज़ादरी किसी लावारिस की अ़ज़ादारी नहीं है। हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम "सारल्लाह" हैं लेहाज़ा ख़ुदा उनकी अ़ज़ादारी का मुहाफ़िज़-ओ-मुरव्विज है, इसी के साथ साथ ख़ुदा ने अपनी आख़री हुज्जत फ़र्ज़न्दे हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम हज़रत वलीये अ़स्र हुज्जत बिन अल-हसन अल-अ़सकरी अलैहेमस्सलाम को अपने जद की अ़ज़ादारी का मुहाफ़िज़ क़रार दिया है। आम तौर से आम लोग २ महीना अ़ज़ादारी करते हैं लेकिन फ़र्ज़न्दे सैयदुश्शोहदा साल भर अ़ज़ादार हैं। हम तो सिर्फ़ मसाएब पर आँसू बहाते हैं वोह अपने जद के मसाएब पर ख़ून के आँसू बहाते हैं। ख़ून के आँसू बहाना उस मअ़्रेफ़त-ओ-मोहब्बत की बेना पर है जो इमामे वक़्त अलैहिस्सलाम को हासिल है। ख़ुदावन्द आलम की बारगाह में अम्बिया और अइम्मा की निगाह में हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की जो अ़ज़मत-ओ-मन्ज़ेलत है उसकी बेना पर आँखों से ख़ून के आँसू रवाँ होते हैं। गुज़श्ता और मौजूदा ज़माने के एअ़्तेराज़ करने वालों को इस अ़ज़मत-ओ-मन्ज़ेलत का ज़रा भी अन्दाज़ा और एहसास होता तो एअ़्तेराज़ात करके अ़ज़ादारों की सफ़ों में रख़ना और एख़्तेलाफ़ ईजाद न करते। इस तरह की बातों से अ़ज़ादारी पर कोई ख़ास असर नहीं पड़ता है मगर एअ़्तेराज़ करने वालों की नीयतों का ज़रूर अन्दाज़ा हो जाता है।

बहरहाल हर दौर में अ़ज़ादारी के तअ़ल्लुक़ से सवालात होते रहे हैं, उ़लमाए केराम, मराजेअ़ एज़ाम उनका जवाब देते रहे हैं इससे पहले उस्तादुल फ़ुक़हा वल मुज्तहेदीन हज़रत आयतुल्लाहुल उ़ज़्मा आक़ा मीर्ज़ा नाईनी अ़लैहिर्रह्मा वर्रिज़वान से सवालात किए गए थे

जिन के उन्होंने जवाबात मरहमत फ़रमाए थे उनके जवाबात की उस वक़्त से लेकर आज तक मराजेअ् ने ताईद फ़रमाई है अक्सर ने इस तरह ताईद फ़रमाई है "हमारे उस्ताद ने जो फ़रमाया है वोह बिल्कुल दुरुस्त है।" इन सवालात-ओ-जवाबात के उर्दू तर्जुमे भी मौजूद हैं, मोअ्मेनीन उनका ज़रूर मुतालेआ फ़रमाएँ।

इसी तरह के सवालात अस्रे हाज़िर के मराजेअ् बुज़ुर्ग-ओ-बरतर हज़रत आयतुल्लाहुल उज़्मा आक़ा सीस्तानी मद्द ज़िल्लहुल आली से भी किए गए हैं उन में से चन्द सवालात-ओ-जवाबात को यहाँ नक़्ल करने की सआदत हासिल कर रहे हैं। ख़ुदा हम सब को ज़िन्दगी के आख़री लम्हात तक पूरे होश-ओ-जोश-ओ-ख़रोश से अज़ादारिए सैयदुश्शोहदा अलैहिस्सलाम बरपा करने उसमें शिरकत करने की अज़ीम सआदत नसीब फ़रमाए। वक़्ते एह्तेज़ार से लेकर जन्नत के आख़री दर्जात तक हज़रत सैयदुश्शोहदा अलैहिस्सलाम की शफ़ाअत नसीब फ़रमाए। आमीन।

(१) सवाल

बख़िदमत मरजए बुज़ुर्गवार सैयद सीस्तानी दाम ज़िल्लहुल वारिफ़

अस्सलामो अलैकुम व रह्मतुल्लाहे व बरकातोहू

ख़ुदा आप को अज़ीम अज्र-ओ-सवाब मरहमत फ़रमाए।

सैयदुश्शोहदा हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के अरबईन के मौक़ेअ् पर हम लोग करबलाए मुक़द्दसा का सफ़र कर रहे हैं इस मौक़ेअ् पर हम आप से मोअद्दबाना इल्तेमास करते हैं हमें पिदराना नसीहत फ़रमाएँ ताकि इस मुक़द्दस सफ़र का असर ज़्यादा हो और अज्र-ओ-सवाब नसीब हो। उन बातों की तरफ़ मुतवज्जेह करें जिनसे हम ग़ाफ़िल और नावाक़िफ़ हैं। उम्मीद है कि आप की येह नसीहत हर एक के लिए मुफ़ीद साबित हो।

ख़ुदावन्द आलम आप का मुबारक साया हमारे सरों पर हमेशा बाक़ी रखे।

चन्द मोअ्मिनीन

जवाब

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अल्हम्दो लिल्लाहे रब्बिल आलमीन वस्सलातो वस्सलामो अला सैयदना मोहम्मद व आलेहित्ताहेरीन

ख़ुदावन्द आलम ने जिन मोअ्मिनीन को इस मुक़द्दस ज़ियारत का शरफ़ मरहमत फ़रमाया है उन्हें इस हक़ीक़त को मद्दे नज़र रखना चाहिए कि ख़ुदावन्द आलम ने अपने बन्दों में अम्बिया-ओ-मुरसलीन को लोगों के लिए नमूनए अमल और हुज्जत क़रार दिया है ताकि लोग उनकी तअ्लीमात और किरदार की पैरवी करके हेदायत हासिल करें ख़ुदावन्द आलम ने उन की याद को ताज़ा और ज़िन्दा रखने की ख़ातिर उनके मुबारक रौज़ों की ज़ियारत की ताकीद फ़रमाई है ताकि बलन्द तज़्केरा हमेशा बाक़ी रहे और लोग इस तरह ख़ुदावन्द आलम की याद उसकी तअ्लीमात और अहकाम की तरफ़ मुतवज्जेह रहें। येह हज़रात ख़ुदावन्द आलम की एताअत-ओ-फ़रमाँबरदारी में उसकी राह में जेहाद करने उसके दीन की ख़ातिर क़ुर्बानियाँ देने की राह में बेहतरीन नमूनए अमल हैं।

इस बेना पर हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की ज़ेयारत जहाँ उनकी बेमिसाल क़ुर्बानियों की याद दिलाती है वहीं दीनी तअ्लीमात पर अमल करने की दअ्वत देती है। नमाज़, हिजाब, इस्लाहे नफ़्स, अफ़्व-ओ-दरगुज़श्त, सब्र-ओ-बर्दाश्त, आदाब-ओ-एह्तेराम, सफ़र के आदाब की तरफ़ मुतवज्जेह करती है बल्कि इस्लाम की तमाम तर तअ्लीमात की तरफ़ मुतवज्जेह करती है। इस बेना पर येह ज़ियारत ख़ुदावन्द आलम के फ़ज़्ल-ओ-करम से तरबियते

नफ़्स और अअ्ला अख़्लाक़ी अक़दार के हुसूल की तरफ़ एक क़दम होना चाहिए ताकि इसके असरात बअ्द की ज़ियारतों के लिए बाक़ी रहें लेहाज़ा इन ज़ियारतों में हाज़िर होना गोया अइम्मए मअ्सूमीन अलैहिमुस्सलाम की मजालिसे दर्स-ओ-तरबियत में हाज़िर होना है।

हम ने अगरचे अइम्मए मअ्सूमीन अलैहिमुस्सलाम का ज़माना दर्क नहीं किया है ताकि हम उनसे बराहे रास्त इल्म हासिल करते और उनके दस्ते मुबारक से तरबियत हासिल करते लेकिन ख़ुदावन्द आलम ने उनकी तअ्लीमात और उनके नज़रियात को हमारे लिए बाक़ी रखा है हमें उनके मुक़द्दस रौज़ों की ज़ियारत का शौक़ दिलाया है ताकि वोह हमारे लिए बेहतरीन और वाज़ेह नमूनए अमल क़रार पाएँ इस तरह हमारा इम्तेहान भी हो कि हम जो उनकी बारगाह में हाज़िर होने की तमन्ना रखते हैं उनकी तअ्लीमात पर अमल करने का दअ्वा करते हैं उस में किस क़द्र सच्चे हैं जिस तरह उन लोगों का इम्तेहान लिया गया जो गुज़श्ता ज़माने में ज़िन्दगी बसर कर रहे थे। हमें इस बात से पनाह माँगना चाहिए कि हमारी तमन्नाएँ हक़ीक़त के मुताबिक़ न हो। येह बात अच्छी तरह जान लेना चाहिए अगर हम उस तरह रहे जिस तरह अइम्मा अलैहिमुस्सलाम चाहते हैं तो उम्मीद है कि हम उन लोगों के हमराह महशूर होंगे जो उनके साथ शहादत के दर्जे पर फ़ाएज़ हुए थे। जंगे जमल के मौक़ेअ् पर हज़रत अमीरुल मोअ्मेनीन अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया था "वोह लोग भी इस जंग में हमारे साथ शरीक हैं जो इस वक़्त बाप के सुल्ब और माँ के रहम में हैं।" हम में से जो अपनी उम्मीदों में सच्चा है उसके लिए उनकी तअ्लीमात पर अमल करना उनके नक़्शे क़दम पर चलना दुश्वार नहीं है। वोह उनके पाकीज़ा नफ़्सों से पाकीज़गी और उनके आदाब से अदब हासिल करेगा।

ख़ुदारा! ख़ुदारा! नमाज़ का ख़ास ख़याल रखें, रवायतों में इसको दीन का सुतून, मोअ्मिन की मेअ्राज क़रार दिया गया है। अगर येह क़बूल हो गई तो दूसरे अअ्माल क़बूल हो जाएँगे और अगर येह रद्द हो गई तो बक़िया अअ्माल भी रद्द हो जाएँगे। ज़रूरी है कि अव्वले वक़्त नमाज़ का ख़याल रखा जाए। ख़ुदावन्द आलम के नज़्दीक सबसे ज़्यादा महबूब वोह बन्दा है जो उसकी नेदा पर सबसे पहले लब्बैक कहे। मोअ्मिन के लिए येह सज़ावार नहीं है वोह दूसरों की एताअतों में मशग़ूल रहते हुए अव्वले वक़्त नमाज़ से ग़ाफ़िल रहे क्योंकि येह सबसे ज़्यादा बाफ़ज़ीलत एबादत है।

अइम्मा अलैहिमुस्सलाम ने फ़रमाया है :

"जो लोग नमाज़ को हल्का समझेंगे उनको हमारी शफ़ाअत नसीब नहीं होगी।"

हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम ने रोज़े आशूर के सख़्त तरीन हालात में अव्वले वक़्त नमाज़ का ख़याल रखा और फ़रमाया :

"तुम ने नमाज़ को याद किया ख़ुदावन्द आलम तुम को नमाज़ गुज़रों में शुमार करे।"

ख़ुदारा! ख़ुदारा! नीयतों को ख़ालिस रखें इन्सान के अमल की क़द्र-ओ-क़ीमत और बरकत ख़ुलूसे नीयत के एअ्तेबार से है। ख़ुदावन्द आलम सिर्फ़ उस अमल को क़बूल फ़रमाएगा जो पूरी तरह उसके लिए ख़ालिस होगा दूसरों से किसी चीज़ की तवक़्क़ोअ् न रखता होगा। जिस वक़्त हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम मदीनए मुनव्वरा की तरफ़ हिजरत फ़रमा रहे थे, उस वक़्त फ़रमाया :

"जो ख़ुदा और उसके रसूले की ख़ातिर हिजरत कर रहा है उसकी हिजरत ख़ुदा और रसूल की तरफ़ है और जिसकी हिजरत दुनिया की ख़ातिर है उसकी हिजरत दुनिया की तरफ़ है।"

ख़ुदावन्द आलम ख़ुलूस के दर्जात के एअ्तेबार से सवाब में एज़ाफ़ा करता है यहाँ तक कि ७०० गुना एज़ाफ़ा करता है।

ज़ाएरीन के लिए ज़रूरी है कि रास्तों में ज़्यादा से ज़्यादा ख़ुदा का ज़िक्र करें ताकि हर एक क़दम पर ख़ुलूस में एज़ाफ़ा हो। ख़ुदावन्द आलम ने अक़ीदए क़ौल और अमल में ख़ुलूस से ज़्यादा कोई और नेअ्मत बन्दों को अता नहीं की है। ख़ुलूस से आरी अमल ज़िन्दगानिए दुनिया के साथ ख़त्म हो जाता है ख़ुलूसे नीयत से अन्जाम दिया हुआ अमल इस दुनिया में और आख़ेरत में हमेशा बाक़ी रहता है।

ख़ुदारा! ख़ुदारा! हिजाब का ख़याल रखें। अह्लेबैत अलैहिमुस्सलाम ने करबला के सख़्त तरीन हालात में भी इसका ख़याल रखा है इस सिलसिले में उनकी रविश बेहतरीन नमूनए अमल है। दुश्मनों के जिन मज़ालिम से उनको सबसे ज़्यादा अज़ीयत पहुँची वोह हिजाब का छिन जाना था। तमाम ज़ाएरीन के लिए और ख़ास कर ज़ाएरात के लिए ज़रूरी है वोह हर जगह हिजाब का ख़ास ख़याल रखें उन तमाम चीज़ों से परहेज़ करें जो हिजाब के मनाफ़ी हैं जैसे तंग लेबास पहनना नामुनासिब जगहों पर मर्दों के साथ रहना। और इस तरह की आराइश करना जिसकी इजाज़त नहीं दी गई है। लेहाज़ा ज़्यादा से ज़्यादा हिजाब का ख़याल रखें इस मुक़द्दस सफ़रे ज़ियारत को उन तमाम बातों से महफ़ूज़ रखें जो उसके शायाने शान नहीं है।

ख़ुदावन्द आलम की बारगाह में दस्त ब दुआ हूँ हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम और अह्लेबैत अलैहिमुस्सलाम ने ख़ुदा की राह में जो क़ुर्बानिया दी है लोगों की हेदायत की ख़ातिर जो सख़्तियाँ बर्दाश्त की हैं, ख़ुदावन्द आलम दुनिया-ओ-आख़ेरत में उनके दर्जात में एज़ाफ़ा फ़रमाए उन पर इस तरह दुरूद-ओ-सलाम नाज़िल फ़रमाए जिस तरह उन से पहले अपने मुन्तख़ब बन्दों और ख़ास कर जनाबे इब्राहीम अलैहिस्सलाम और उनकी आल पर दुरूद-ओ-सलाम नाज़िल फ़रमाया था।

ख़ुदावन्द आलम की बारगाह में दस्त ब दुआ हूँ हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के ज़ाएरीन की ज़िन्दगी में और उनकी ज़ियारत में बरकत अता फ़रमाए बाफ़ज़ीलत तरीन तरीक़े से क़बूल फ़रमाए जिस तरह वोह नेक बन्दों के अअ्माल को क़बूल फ़रमाता है ताकि ज़ियारत के दौरान उनकी राह-ओ-रविश दूसरों के लिए नमूनए अमल क़रार पाए। अह्लेबैत अलैहिमुस्सलाम की तरफ़ से उनकी मोहब्बत-ओ-मवद्दत का उनके नक़्शे क़दम पर चलने का बेहतरीन अज्र मरहमत फ़रमाए। मैदाने क़यामत में उनको अह्लेबैत अलैहिमुस्सलाम की इमामत के साथ महशूर फ़रमाए। इस राह में शहीद होने वाले लोगों को इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के अस्हाब-ओ-अन्सार के साथ क़रार दे जिन लोगों ने इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की ख़ातिर अपनी जान क़ुर्बान की उनकी मोहब्बत की राह में हर तरह के मज़ालिम और मसाएब को बर्दाश्त किया।

ख़ुदावन्द मुतआल यक़ीनन सुनने वाला और दुआओं को क़बूल करने वाला है।

१३ सफ़र, १४३५ हि.

(२) सवाल

हज़रत इमाम जअ्फ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम की इस रवायत के सिलसिले में हमारे मरजए बुज़ुर्गवार क्या फ़रमाते हैं। इमाम जअ्फ़र सादिक़ अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया :

"जो हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम पर रोए या रोने जैसी शक्ल बनाए उस पर जन्नत वाजिब है।"

जवाब

बिस्मेही तआला

जी हाँ, मुतअद्दिद रवायतों में जिनमें मोअ्तबर रवायतें भी हैं, हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम पर गिरिया करने

वाले से जन्नत का वअ्दा किया गया है उन लोगों से भी जन्नत का वअ्दा किया गया है जो रोने वालों की शक्ल बनाते हैं या अश्आर पढ़कर रोने वाले की शक्ल बनाते हैं। जन्नत के वअ्दे पर तअज्जुब नहीं करना चाहिए। शीआ और सुन्नी रवायतों में बअ्ज़ अअ्माल पर जन्नत का वअ्दा किया गया है। लेकिन इसका मतलब येह नहीं है कि अगर इन्सान वाजिबात को तर्क कर दे और मोहर्रेमात का इर्तेकाब करे वोह जहन्नम के अज़ाब से महफ़ूज़ रहेगा। क़ुरआन करीम की आयतों में तर्के वाजिबात और इर्तेकाबे मोहर्रेमात पर शदीद तरीन अज़ाब का वअ्दा किया गया है। इस तरह की रवायतों का मतलब येह है कि इस तरह के अअ्माल उस वक़्त जन्नत में जाने का सबब हैं जब ख़ुदावन्द आलम की बारगाह में क़बूलियत का शरफ़ हासिल कर लें गुनाहों की कसरत कभी क़बूलियत की राह में रुकावट बन जाती है उसको जहन्नम से नजात और जन्नत में जाने से रोक देती है। दूसरे लफ़्ज़ों में यूँ बयान किया जा सकता है। इस अमले जन्नत से जन्नत का इस्तेहक़ाक़ साबित हो जाता है। बशर्ते कि कुछ ऐसे अअ्माल न हों जो जहन्नम की तरफ़ खींच कर ले जा रहे हों। अब येह बात कि इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम पर गिरिया करने का इस क़द्र सवाब क्यों है? गिरिया इन्सान के रब्त और लगाव को दिल की कैफ़ीयत को पूरी तरह ज़ाहिर करता है। जब दिल शिद्दते ग़म को महसूस करता है ग़म का शदीद तरीन एहसास आँसुओं से ज़ाहिर होता है। इस बेना पर इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम पर गिरिया-ओ-बुका हज़रत रसूले ख़ुदा सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम और अह्लेबैत अतहार अलैहिमुस्सलाम से मोहब्बत-ओ-मवद्दत को ज़ाहिर करता है। उन अहदाफ़-ओ-मक़ासिद से लगाव को ज़ाहिर करता है जिसकी ख़ातिर इमाम अलैहिस्सलाम ने शहादत क़बूल फ़रमाई। येह वाज़ेह हक़ीक़त है कि इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम के इन्क़ेलाब ने तारीख़ को झिंझोड़ कर रख दिया। सरकशों के तख़्त-ओ-ताज को ज़मीं दोज़ कर दिया मोअ्मिनीन के दिलों में इस्लामी तअ्लीमात की अक़दार को पूरी तरह रासिख़ कर दिया। और येह सब नतीजा है अह्लेबैत अलैहिमुस्सलाम से तमस्सुक का और उनकी याद को ताज़ा रखने का। इस तरह की रवायतें इस हक़ीक़त को बयान कर रही हैं।

लेकिन "तबाका" यअ्नी रोने की कोशिश करना इसका मतलब दूसरों के सामने गिरिया का इज़्हार नहीं है बल्कि गिरिया की ज़रूरत को महसूस करते हुए गिरिया की कोशिश करना है। कभी दिल ख़ुश्क हो जाता है एह्सासात सर्द हो जाते हैं उस वक़्त अपने दिल को नर्म करने की कोशिश करना है ताकि अक़्ल की आवाज़ पर लब्बैक कहते हुए दिल नर्म हो जाए, एहसासात मुतास्सिर हो जाएँ और आँसू निकल आएँ इसी तरह ज़िक्रे ख़ुदा पर रोने या रोने की कोशिश करने पर जन्नत का वअ्दा किया गया है। मुख़्तलिफ़ उलमा ने इस बात को ज़िक्र किया है ख़ास कर जनाब अल्लामा मुक़र्रम रह्मतुल्लाह अलैह ने अपनी किताब "मक़्तलुल हुसैन" में।

२९ मोहर्रमुल हराम, १४३५ हि.

(३) सवाल

जब नमाज़ का वक़्त आ जाए मसलन ज़ोहर की नमाज़ का वक़्त आ गया उस वक़्त मजलिस-ओ-अज़ादारी को ख़त्म कर देना चाहिए? या मुकम्मल करना चाहिए? क्या ज़्यादा बेहतर है?

जवाब

अव्वले वक़्त नमाज़ अदा करना ज़्यादा बेहतर है। बहुत ज़्यादा अहम येह है कि अज़ादारी को इस तरह मुनज़्ज़म किया जाए कि नमाज़ से टकराव न हो।

(४) सवाल

क्या मुनासिब है कि सुब्ह सवेरे मुख़्तसर से लोगों के साथ जुलूसे अज़ा निकालें और नमाज़ के वक़्त से पहले तमाम करें या अज़ादारों का इन्तेज़ार करें? इस सूरत में जुलूसे अज़ा के दौरान नमाज़ का वक़्त आ जाए।

जवाब

कसीर तअ्दाद में अज़ादारों का इन्तेज़ार करना अच्छा है। लेकिन ज़रूरी है कि नमाज़ के वक़्त जुलूस को मौक़ूफ़ कर दिया जाए। (नमाज़ के) बअ्द जुलूस को जारी रखा जाए।

२९ मोहर्रमुल हराम, १४३५ हि.

(५) सवाल

हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम और उनके अस्हाब की शहादत की याद में हमारे एलाक़े में बड़ी तअ्दाद में मजलिसें बरपा होती हैं। मोअ्मिनीन अह्लेबैत अलैहिमुस्सलाम की मोहब्बत में बहुत कुछ ख़र्च करते हैं इन मजलिसों में मअ्नवी-ओ-माद्दी दोनों तरह की ख़िदमात अन्जाम दी जाती हैं। येह मजलिसें एक ही वक़्त में या क़रीब क़रीब मुन्अक़िद होती हैं। आख़िरे मजलिस में खाना पेश किया जाता है येह सिलसिला सुब्ह ७ बजे से दोपहर १२ बजे तक जारी रहता है जिसकी बेना पर बहुत सा खाना कूड़ेदान में फेंक दिया जाता है। आप की नज़रे मुबारक में येह काम कैसा है?

जवाब

खाना बर्बाद करना शरीअत की नज़र में नापसन्दीदा और हराम काम है। ज़रूरी है कि सहीह क़दम उठाकर इस तरह की बर्बादी को रोका जाए। लोगों के दरमियान तआवुन-ओ-तफ़ाहुम बरक़रार करके बस इस क़द्र खाना तैयार किया जाए जिस क़द्र ज़रूरी है।

२९ मोहर्रमुल हराम, १४३५ हि.

सफ़हा न॰ १० का बाक़ी .....

७) पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम का गिरिया उस्मान बिन मज़ऊन की मौत पर।

८) पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम का गिरिया सअ्द बिन रबीअ् की मौत पर।

९) पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम का गिरिया हज़रत इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम की शहादत पर।

शहादत से पहले और शहादत के बअ्द भी इन तमाम मौज़ूआत की तफ़सील के लिए रुजूअ् करें किताब "शुब्हाते अज़ादारी" जि.१, स.२८८-३०७।

अस्सलामो अलैका या अबा अब्दिल्लाह, लबैक या हुसैन अलैहिस्सलाम

सफ़हा न॰ २० का बाक़ी .....

क़लील हैं उन आँसुओं में शामिल हो जाएँ जो मुन्तक़िमे ख़ूने हुसैन अलैहिस्सलाम के चश्मे मुबारक से अब्रे बाराँ की तरह मुसलसल जारी हैं और एक दरिया है जो मौजें मार रहा है।

ऐ मेरे आक़ा! ऐ मेरे मौला! मेरे मज़लूम इमाम हमारी दुआओं को बारगाहे एलाही में क़बूलियत का शरफ़ अता फ़रमाएँ। हमें और हमारी आइन्दा आने वाली नस्लों को इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम पर गिरिया करने वालों में शुमार फ़रमाएँ ताकि रोज़े महशर पैग़म्बरे अकरम सल्लल्लाहो अलैहे व आलेही व सल्लम और जनाबे ज़हरा सलामुल्लाह अलैहा के सामने सुर्ख़रू हो सकें। आमीन या रब्बल आलमीन।

AL-QAEM AL-MUNTAZAR, JUL 2023 TO DEC 2023, VOL. XXV, ISSUE NO. 2, RNI NO. 70132/98

हज़रत इमाम जअ़्फ़र सादिक़ अ़लैहिस्सलाम:

क़यामत के दिन हर एक येह तमन्ना करेगा कि काश वोह इमाम हुसैन अ़लैहिस्सलाम का ज़ाएर होता क्योंकि हर एक उस दिन ख़ुदा की बारगाह में ज़व्वारे हुसैन अ़लैहिस्सलाम की इज़्ज़त-ओ-करामत का मुशाहेदा करेगा।

(कामेलुज़्ज़ेयारात, बाब ५०, ह.१)

www.almuntazar.in

ख़त-ओ-किताबत का पता:

एसोसीएशन ऑफ़ इमाम महदी (अ़.स.), पोस्ट बॉक्स न. १९८२२, मुम्बई-४०००५०

Published and Edited by Syed Mohammed Akbar Rizvi on behalf of Association of Imam Mahdi (A.S.), d from 97/C, Bazar Road, Bandra (W), Mumbai 400050, and Printed at Gazelle Enterprise Offset Printing & Packaging, 504/A-Sussex Industrial Estate, D.K. Cross Road, Byculla, Mumbai 400 027 (M.S.)